ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

पौष-माघ संवत् नानकशाही ५५२ जनवरी 2021 वर्ष १४ अंक ५

तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब (बिहार)

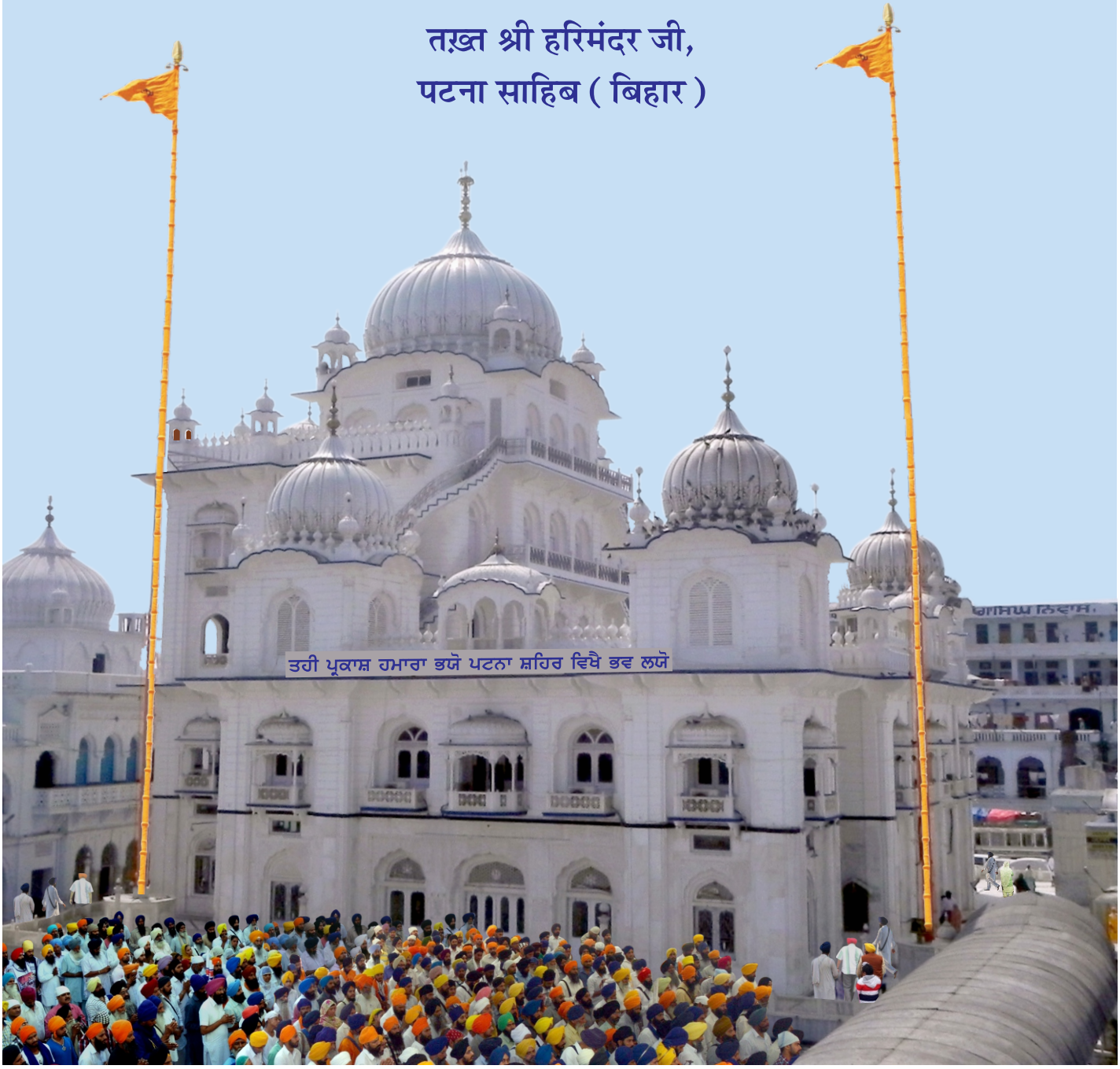

जिंनूं मज़हबां वाले कहिण कचहरी धर्म दी,
दुखां मारी धरती उथे जा पुकारदी।
कहिंदी पापां दी अत्त हो गई मेरे दातिआ!
पै गई होंद जापदी शक विच बखशणहार दी।
जिन्हां देणा सी उपदेश जग नूं धर्म दा,
पट्टी नित्त पढ़ाउंदे रहिंदे अत्याचार दी।
हाकम थापे गए सी परजा पालण वासते,
परजा खाण दी नीती बण गई है सरकार दी।
लोड़ सी ढालां दी छां करदा कोई गरीब 'ते,
पी रत्त प्यास बुझे न योधे दी तलवार दी।
ऐ प्रभ रचनहार! ए रचना अपणी सांभ लै,
मानस रूप दैंत दा, मैं नहीं भार सहारदी।
जे तूं चाहुंदा हैं दुनिया तेरी वस्सदी रहे,
छेती भेज कोई रूह सच्चे परउपकार दी।
'सीतल' मैं नहीं हुण जा विछणा किसे भुलेखे 'ते,
मानस देही होवे, जोत होवे करतार दी।

—ज्ञानी सोहण सिंघ 'सीतल' (दिवंगत)

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

पौष–माघ, संवत् नानकशाही 552
वर्ष 14 अंक 5 जनवरी 2021

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

शाहि शहनशाह गुर गोबिंद सिंघ 8
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : क्रांतिकारी के रूप में 14
–डॉ. परमजीत कौर

. . . बाबा दीप सिंघ जी शहीद 20
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

धर्म और नैतिकता का मार्गदर्शक : ज़फ़रनामा 23
–डॉ. परमवीर सिंघ

श्री अनंदपुर साहिब की आरंभिक लड़ाइयां 27
– ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल (दिवंगत)

अंम्रित सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै 39
–डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल

सिध गोसटि : विचार व्याख्या 43
–डॉ. मनजीत कौर

ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ बाणी की इस पावन पउड़ी में प्राचीन काल से चली आ रही माघ महीने में तीर्थ-स्नान की परंपरा की पृष्ठभूमि में मनुष्य-मात्र को परमात्मा के सच्चे नाम-सिमरन का सहारा लेते हुए वास्तविक आत्मिक विकास के लिए गुरमति महामार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे मनुष्य-मात्र! तेरे लिए वास्तविक लाभ लेने का रास्ता यही है कि माघ के महीने में तू नेक जनों— गुरमुखों की संगत कर। उनसे मिलकर प्रभु-नाम के महत्त्व पर विचार कर। तू गुरमुखों के साथ परमात्मा के नाम की स्तुति रूपी धूल का स्पर्श कर। यही तेरा स्नान है। तू माघ माह में परमात्मा का नाम स्मरण कर और यह अपने तक ही सीमित न रख। परमात्मा द्वारा मिली इस अनमोल दात (बख्शिश) को आगे भी वितरित कर। यहां समझने योग्य विचार-बिंदु यह है कि गुरमति में अकेले में प्रभु-नाम-चिंतन करने की बजाय संगत में जाकर चिंतन-मनन करने का अधिक महत्त्व माना जाता है।

सतिगुरु पातशाह कथन करते हैं कि हे मानव! यह ऐसा कारगर ढंग है कि इससे मन पर चढ़ी हुई कई जन्मों में किए दुष्कर्मों की मैल उतर जाएगी और तेरे मन से अहंकार चला जाएगा। काम और क्रोध के नुकसानदेय विकारी भाव तुझ पर भारी (हावी) नहीं रहेंगे। न ही मोह तंग करेगा और लालच रूपी कुत्ता भी तुझे दर-दर नहीं भटकाएगा। सच्चे मार्ग पर चलने से तेरा अपना आत्मिक लाभ तो है ही, संसार भी तेरी शोभा का गुणगान करेगा। अठसठ तीर्थों के स्नान से प्राप्त किए जाने वाले जो पुन्य गणना में आते हैं वे जीवों पर दया-भाव प्रकट करने से स्वत: मिल जाते हैं अर्थात् माघ महीने में हे मनुष्य! तुझे हिंसक व्यवहार को छोड़ना होगा।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य को नेक-जनों की संगत प्रभु स्वयं प्रदान कर देता है वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है। जिनको अपना मूल स्रोत परमात्मा मिल गया, मैं उन पर सदके जाता हूं। माघ महीने में जिन पर पूरा गुरु कृपालु होता है वे भाग्यशाली लोग मात्र बाहरी स्नान से नहीं, बल्कि रूहानी स्नान करने से स्वच्छ होते हैं।

संपादकीय

परजा खाण दी नीती बण गई है सरकार दी

आदर्श-शासन के लिए राजा का धर्मी तथा इतिहास का ज्ञाता होना अति आवश्यक है। यदि राजा धर्मी होगा तभी उसमें न्याय, परोपकार आदि सद्गुणों की भावना होगी। यदि राजा इतिहास का ज्ञाता होगा तो भूत काल में घटित घटनाओं से दिशा लेकर जन-कल्याण की नीति तैयार कर सकेगा। अधर्मी और इतिहास से अनभिज्ञ राजा की नीतियां प्रजा एवं देश के लिए घातक ही सिद्ध होंगी। इतिहास जानना आम जन के लिए भी आवश्यक है ताकि बीत चुके समय की घटनाओं से सबक लेकर भविष्य को संवारा जा सके तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने की प्रेरणा हासिल कर हुक्मरानों की धोखाधड़ी से बचा जा सके।

जब फ्रांस और रूस की क्रांति के बारे में पढ़ाया जा रहा था तो शायद उस समय भारतीय शासक पिछली कतार में बैठे झपकियां ले रहे थे, क्योंकि जिन शासकीय-प्रशासकीय ख़ामियों के कारण फ्रांस-निवासियों को आंदोलन करना पड़ा था उसके २३१ वर्ष बाद आज हू-ब-हू हालात भारत में बने हुए हैं। खामियों के कारण थे— निरंकुश सरकार, शाही दरबार की फ़िज़ूल ख़र्ची, स्वतंत्रता में बाधा, अयोग्य केंद्रीय शासन-प्रबंध, असंतोषजनक न्याय-प्रबंध, दोषपूर्ण कर-प्रणाली, अति केंद्रीयकरण, कृषि की दुर्दशा, ग़रीबी और महँगाई, धार्मिक असहनशीलता, शासकों का हठी स्वभाव, मित्रों के प्रति उदासीनता, अपने सगे-संबंधियों के लिए विशेष रियायतें, साधारण जनता की आर्थिक मंदहाली आदि। आज यही सब ख़ामियाँ भारतीय शासन में शिखर तक पहुँच गई हैं, जो किसी बड़ी क्रांति की माँग कर रही हैं। यदि कोई शासकीय शख्स इतिहास-ज्ञाता होने का दम भरे तो फिर सवाल पैदा होता है कि हमारे शासकों ने इतिहास से क्या सबक लिया ? रूस की क्रांति के अहम कारण 'रूसी सभ्यता सब पर थोपने का यत्न' को आज केंद्रीय हुकूमत ने 'राष्ट्र की केंद्रीय विचारधारा' के तौर पर अपनाया हुआ है।

श्री गुरु नानक पातशाह ने फ्रांस की क्रांति के लगभग ३०० वर्ष पूर्व ''राजे चुली निआव की'' के माध्यम से राजा के लिए जो आदर्श मार्ग सुझाया है, उस पर अमल करने से उपरोक्त सभी खामियों को दूर किया जा सकता है। इसी प्रकार जो बात हम बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा महाराजा रणजीत सिंघ के न्यायकारी प्रबंध में देखते हैं उससे भी हमारा भारतीय शासक वर्ग अनभिज्ञ है। गुरबाणी व सिक्ख इतिहास से अनभिज्ञ हैं हमारे नेतागण।

भारत सरकार द्वारा लाए गए तीन किसान-विरोधी काले कानूनों से देश में लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी बज चुकी है। यह घंटी सुचेत कर रही है कि देश बहुत तेज़ी के साथ आर्थिक ग़ुलामी की तरफ बढ़ रहा है। देश का संघीय ढांचा खतरे में है, क्योंकि केंद्र सरकार राज्यों के अधिकार-क्षेत्र में सरेआम दख़लंदाज़ी कर रही है। संविधान-सृजकों ने बड़ी दूरंदेशी के साथ न्याय-पालिका को विधान-पालिका से शक्तिशाली व बेहतर रखा था, ताकि विधान-पालिका द्वारा लागू लोक-विरोधी कानूनों को न्याय-पालिका में चुनौती दी जा सके, परन्तु यहां तो न्याय-पालिका का विधान-पालिका के दबाव में आकर फ़ैसले करना भारतीय संविधान की तौहीन और लोकतंत्र के लिए और भी बड़ा ख़तरा है। कॉर्पोरेट घरानों को लाभ पहुँचाने के लिए बनाए गए कृषि से सम्बन्धित तीन काले कानूनों को लेकर सरकार के अड़ियल रवैये ने भारत की मौजूदा चुनाव-प्रक्रिया पर भी प्रश्न-चिन्ह खड़े

किये हैं। जब देश की अस्सी-नब्बे प्रतिशत आबादी सरकार की कारगुज़ारी से संतुष्ट न हो और सरकार फिर भी अपना राज-हठ न छोड़े तो समझना पड़ेगा कि सरकार को लोगों की वोट न मिलने का कोई डर नहीं। उसके पास इसका कोई अन्य बदल अवश्य मौजूद है। इसी कारण देश में ई. वी. एम. की विरोधता भी लगातार बढ़ने लगी है।

किसानी आंदोलन का मसला केवल किसानों तक महदूद नहीं, यह हर उस भारतवासी का मसला है जो मेहनत कर अपने परिवार का पेट पालता है। यह किसानों का निजी-स्वार्थी आंदोलन नहीं, बल्कि यह तो देशवासियों के लिए परोपकारी आंदोलन है। इसी लिए देश के हर वर्ग की तरफ से इस आंदोलन को समर्थन मिला है। भारतीय लोग भक्त कबीर जी के वचन— ''पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु॥'' वाली शिक्षा को समझ चुके हैं। भारत सरकार जिस तरह हवाई सेवा, रेल व सड़क सेवा , शिक्षा-प्रबंध और देश की सुरक्षा का प्रबंध भी अपने चहेते कॉर्पोरेट घरानों को देने जा रही है, इसके घातक प्रभाव से कोई भी वर्ग अछूता नहीं बचेगा। सरकार का यह व्यवहार देश में आर्थिक मंदहाली और बेरोज़गारी और भी बढ़ायेगा। सारा देश बड़े कॉर्पोरेट घरानों के हाथ बेच दिया गया है। आने वाला समय देशवासियों के लिए और भी भयानक होगा। सरकारी नौकरियाँ ख़त्म हो जाएंगी। प्राईवेट कंपनियाँ अपनी मनमर्ज़ी की तनख़्वाह देंगी। जब दिल करे नौकरी पर रखें और जब दिल करे निकाल दें। कोई अपील-दलील नहीं सुनेगा। तीन-तीन लाख के कप में चाय पीने वाले कॉर्पोरेट घराने तो और भी अमीर हो जाएंगे, परन्तु देशवासियों को चाय पीने के लिए ठूठा भी नसीब नहीं होगा। महँगाई के कारण लोग भर पेट खाने से भी आतुर हो जाएंगे। अब सभी भारतवासियों को एकजुट होकर संघर्ष करने का और देश में बड़ी क्रांति लाने का समय आ गया है।

इस किसानी आंदोलन का पंजाब से शुरू होना प्रो. पूरन सिंघ के वचन 'पंजाब जिऊंदा गुरां दे नां ते' (पंजाब जिंदा है अपने गुरु साहिबान के नाम पर) को साक्षात कर गया है। इस आंदोलन ने साबित कर दिया है कि सिक्ख गुरु साहिबान द्वारा जब्र, ज़ुल्म, अन्याय, धक्केशाही के विरुद्ध हक, सच व न्याय के लिए लड़ते हुए हर प्रकार की कुर्बानी करने वाली प्रदत्त जीवन-जाच को गुरु के सिक्ख भूले नहीं। दिसंबर का महीना भी वही महीना है, जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साहिबजादों ने जब्र-ज़ुल्म के विरुद्ध माता गुजरी जी तथा असंख्य सिंघ-सिंघनियों सहित शहादत प्राप्त की थी। आज इतिहास ने अपने आप को इस प्रकार दोहराया है, मानो मुग़लिया सलतनत मुज़ारेदारी प्रबंध लागू कर किसानों से किसानी करने के हक छीन रही है और बाबा बंदा सिंघ बहादुर पुन: एक बार पंजाब के किसानों के रूप में देश भर के किसानों का नेतृत्व कर किसानी अधिकारों की रक्षा कर रहे हैं। कोहरे वाली ठंडी रातें और सीना-चीरती ठंड में बच्चे, बुज़ुर्ग, माताएं-बहनें अपने हक के लिए दिल्ली की सड़कों पर उतरी हैं और देश-विदेश की समाज-सेवी संस्थाएं मदद के लिए आगे आई हैं। बीबी जगीर कौर, प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने जहाँ धरने पर बैठी संगत के लिए लंगर के विशेष प्रबंध करवाए हैं, वहीं महिलाओं की मुश्किलों का हल करते हुए आरज़ी स्नान-घर और पखानों का विशेष प्रबंध करवाया है।

सरकार के इन काले कानूनों के रूप में लोक-मारू नीति को देख कर ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल की लिखी लाइनें याद आ जाती हैं :

हाकम थापे गए सी परजा पालन वासते,

परजा खाण दी नीती बण गई है सरकार दी।

इस किसानी आंदोलन ने पंजाब को नशेड़ी बताने वाले बिकाऊ मीडिया और फ़िल्म नगरी के मुँह पर करारा थप्पड़ जड़ा है। पंजाबियों के कृषि के साथ जुड़े रहने के मोह, स्वाभिमानी स्वभाव, अपने अधिकारों के लिए जूझने के जज़्बे और इंसाफ़ की लड़ाई को भारतीय मीडिया द्वारा सांप्रदायिक रंगत देकर बदनाम करना अति निंदनीय है।

हैरानी इस बात की होती है कि जिन्होंने देश की प्रजा और लोकतंत्र के रक्षक बनना था वे चंद कॉर्पोरेट घरानों की ख़ातिर देश की जनता के भक्षक बन गए हैं। जिस बाड़ ने देश रूपी खेत-खलिहान की रक्षा करनी थी, वह हुकूमत रूपी बाड़ देश को उजाड़ने पर क्यों तुली हुई है ? आज की हुकूमत देश के लोकतंत्र के लिए ख़तरा क्यों बन रही है ? इसे शांत और ख़ुशहाल बसते लोग पसंद क्यों नहीं हैं ? क्या इस देश की बर्बादी चाहने वालों का इस देश के साथ कोई लगाव नहीं ? क्या ये इस देश के मूल निवासी नहीं हैं ? ये कहाँ से आए हैं ? कौन हैं ये ? इनकी पृष्टभूमि क्या है ? ऐसे बहुत-से सवाल पैदा कर रहा है हुकूमत करने वाले लोगों का लोक-मारू घटनाक्रम।

हज़ारों वर्ष पूर्व सिंधु घाटी के आस-पास सभ्यक द्राविड़ जाति ख़ुशहाल जीवन जी रही थी। लगभग २००० ईसा पूर्व में एक बहुत ही असभ्य, झगड़ालू, ईर्ष्यालु और खूँखार विदेशी आर्यन जाति ने इस देश में दस्तक दी। इस आर्यन जाति के मध्य एशिया में से उजड़ कर भारत आने के कारणों में से एक कारण यह भी माना जा सकता है कि इसकी अमानवीय कार्यवाहियों के कारण इसें मध्य एशिया से अवश्य निकाला गया होगा, क्योंकि यह जाति शान्ति और ख़ुशहाली की दुश्मन थी। इसे शांत और ख़ुशहाल बसते लोग पसंद नहीं थे। इस जाति के लोगों ने शान्ति-पसंद ख़ुशहाल जीवन जी रहे द्राविड़ों पर कठोर अत्याचार किये। इसके बाद के भारत के इतिहास में यह भी देखने को मिलता है कि लंबे समय से देश में इस विशेष जाति द्वारा लोगों को जात-पांत में बाँट कर फैलायी गई नफ़रत और भेदभाव ने देश व समाज को कमज़ोर किया, जिस कारण हज़ारों साल हमारा देश विदेशियों का ग़ुलाम रहा। हैरानी तो इस बात की है कि चाहे मुगलों से आज़ादी के लिए संघर्ष लड़ा गया, चाहे अंग्रेज़ों से आज़ादी के लिए खून बहाया गया, परन्तु इस जाति ने कभी अपनी एक उंगली तक नहीं कटाई। यह सारा वृत्तांत हमारे बहुत-से सवालों के जवाब देने में सक्षम है। आज शान्ति के साथ ख़ुशहाल जीवन जी रहे पंजाबियों की बर्बादी चाहने वाली पार्टियों की पृष्टभूमि का ज्ञान भारत के प्राचीन इतिहास में से आसानी से तलाशा जा सकता है।

पंजाब में शुरू हुई यह क्रांति की लहर अभी तो कृषि-व्यवसाय तक ही सीमित है, मगर आने वाले समय में देश को बचाने के लिए लोकतंत्र की रक्षा की लड़ाई, धर्म-निष्पक्षता की लड़ाई, संघीय ढांचे को बरकरार रखने और राज्यों के अधिकारों की लड़ाई तथा सबसे अहम ई. वी. एम. प्रणाली के विरुद्ध लड़ाई लड़नी अभी बाकी है।

—सतविंदर सिंघ फूलपुर
फोन : 99144-19484

शाहि शहनशाह गुर गोबिंद सिंघ

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

चारों साहिबजादों के महान बलिदान के बाद पंजाब से दक्षिण की ओर जाते हुए जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पुष्कर में रुके तो स्थानीय ब्राह्मणों का एक दल चेतन नामक पुजारी के नेतृत्व में उनके दर्शन के लिये आया। गुरु साहिब के साथ सिक्खों का दल भी था जो पांच ककारों से सजे हुए थे। उन्होंने गुरु साहिब की वन्दना कर उनसे प्रश्न किया कि ''आपकी जाति, आपका वर्ण क्या है? आपके साथ के लोग केशधारी हैं। क्या आपने इनकी कोई नई जाति बनाई है? इनका वेश अलग ही है। ऐसा वेश न तो हिंदू धारण करते हैं न मुसलमान।'' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उनकी शंकाओं का निदान करते हुए कहा कि ''यह खालसा है, जो हिंदू और मुसलमान दोनों का ही हित करने वाली तीसरी शक्ति है। इन्हें तुम लोग परमात्मा का दास समझो।'' औरंगजेब के बाद दिल्ली के तख़्त पर बैठने वाले बादशाह बहादुर शाह को भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यही कहा था कि खालसा का उद्देश्य सभी का कल्याण करना है। उन्होंने कहा कि जो धर्म, वर्ण, जाति के झगड़े से ऊपर उठ कर मानव-मात्र की बात में विश्वास रखता है वही खालसा की महानता को समझ सकता है। ब्राह्मणों के दल ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आगे शीश निवाते हुए कहा कि ऐसे महान पंथ की साजना आप जैसा महान पुरख ही कर सकता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व ऐसा है जिसे समझ पाना साधारण मनुष्य के वश में नहीं है। साधारण मनुष्य का सीमित ज्ञान और सीमित दृष्टि है। वह सागर में उठने वाले एक बुलबुले की तरह है। जिसने बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया, उसकी दृष्टि को कुछ विस्तार मिल गया। उसे बड़ा बुलबुला कह सकते हैं। छोटा हो या बड़ा, बुलबुला तो बुलबुला है, जिसकी रचना एक समान ही होती है। प्रसिद्ध सूफी शायर अल्ला यार खान योगी ने लिखा है कि बुलबुला एक आँख से क्या-क्या देख सकता है?

इक आंख से क्या बुलबुला कुल बहिर को देखे?
साहिल को या मंझदार को या लहर को देखे?

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व अपने आप में इतने रंग सहेजे हुए था कि एक-एक रंग को ही देखने-समझने में जीवन गुजर जाए। गुरु साहिब का सबसे बड़ा उपकार खालसा पंथ का सृजन करना था।

श्री गुरु नानक साहिब ने सिक्ख तैयार किये जो परमात्मा-प्रेम के मार्ग पर पूर्ण समर्पण और भावना के साथ चलने वाले तथा प्रेम-भावना में सर्वस्व अर्पण करने में तनिक भी संकोच न करने वाले

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४१७८-५२८९९*

साधक थे। श्री गुरु अरजन साहिब ने भी कहा कि जो मृत्यु के सच को पहले स्वीकार कर जीवन की सभी कामनायें त्याग दे और विनम्रता, संतोष, सहज, दया, प्रेम जैसे गुण धारण करे वही सिक्खी के मार्ग पर चलने के लिये आये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में इन सारे गुणों के चमकदार रंग प्रकट दिखते हैं। मात्र नौ वर्ष की आयु में ही गुरु साहिब ने जीवन और मृत्यु के गूढ़ रहस्य समझ लिये थे। जब कश्मीर के ब्राह्मण पंडित कृपाराम के नेतृत्व में श्री अनंदपुर साहिब श्री गुरु तेग बहादर जी के दरबार में आये थे और औरंगजेब के अत्याचारों की व्यथा सुनाई थी, तब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को निष्कर्ष तक पहुँचने में जरा भी देर नहीं लगी कि जीवन का क्या मोल है और क्या सदुपयोग है। यह निर्णय श्री गुरु तेग बहादर जी मन में ले चुके थे किन्तु उसे अविलंब प्रकट कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भविष्य की दिशा तय कर दी। पांच वर्ष की आयु में पटना साहिब से श्री अनंदपुर साहिब पहुँचने के बाद वे अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर जी से प्रथम बार मिले थे। उन्हें अपने पिता का सानिध्य मात्र चार वर्ष ही प्राप्त हो सका, किन्तु ये चार वर्ष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अति विषम परिस्थितियों में सिक्ख पंथ का नेतृत्व करने योग्य बनाने के लिये पर्याप्त थे। यह बात साधारण मानवीय दृष्टि से की जाए तो असाधारण लगती है, किन्तु पीर भीखन शाह जैसे धर्मात्मा ही थे जिन्होंने अपनी दैवीय दृष्टि से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पटना साहिब में प्रकाश होते ही जान लिया था कि परम ज्योति धरती पर उतरी है। वे ठसका में पश्चिम की बजाय पूरब दिशा की ओर नमाज पढ़ तुरंत ही पटना साहिब की ओर उस परम ज्योति का दर्शन करने के लिये कूच कर गये थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी श्री गुरु नानक साहिब की दसवीं ज्योति थे और परमात्मा का ही रूप थे। आज तक संसार के विभिन्न धर्म-ग्रन्थों में परमात्मा के जिन गुणों का वर्णन मिलता है, वे सारे गुण उनमें प्रकट हुए। यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महानता थी कि उन्होंने अपने सांसारिक जीवन को साधारण मनुष्य की तरह जीआ और यह भी कहा कि यदि कोई उन्हें परमेश्वर कहेगा तो वह नर्क कुंड में पड़ दुख भोगेगा। गुरु नानक साहिब का फरमान है कि संसार में सभी मनुष्य अधिक से अधिक जीना चाहते हैं। कोई भी ऐसा नहीं है जो मरने की कामना रखता हो— ''बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ॥'' जो जीवन त्यागने की कामना करता है वह परमात्मा का ही रूप हो जाता है। जीवन और मरण उसके लिये एक समान हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के लिये जीवन और मृत्यु में कोई भेद नहीं था, क्योंकि वे जीवन और मृत्यु के भेद को भली-भांति पहचानते थे।

सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ॥
नानक अवरु न जीवै कोइ॥
जे जीवै पति लथी जाइ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ॥ *(पन्ना १४२)*

उपरोक्त वचन श्री गुरु नानक साहिब का है। गुरु साहिब ने कहा कि जीवन का लक्ष्य है कि मन में परमात्मा के लिये प्रेम, श्रद्धा और भावना भरी हो। जिसके मन में परमात्मा की भक्ति और समर्पण नहीं है उसे जीवित नहीं कहा जा सकता। ऐसे लोग भले ही जैविक रूप से जीवित हों किन्तु वे मृतक

ही हैं। गुरु साहिब ने कहा कि यदि जीवित रहते हुए मनुष्य विकारों और माया के मोह में जीवन व्यर्थ गंवा रहा है तो वह कुछ भी कर ले उसका कोई लाभ उसे मिलने वाला नहीं है। श्री गुरु नानक साहिब के यही वचन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन में प्रखर होते दिखे। वे परमात्मा-प्रेम की भावना का सर्वोत्कृष्ट रूप थे। उन्होंने जीवन ही नहीं मृत्यु को भी धर्म से जोड़ कर देखा। उन्होंने संसार को सिखाया कि जीवन और मृत्यु दोनों को ही मन के संकल्प से सहज बनाया जा सकता है।

जीवन की श्रेष्ठता यदि परमात्मा की भक्ति में है तो मृत्यु भी वह उत्तम है जो दीन व दुखी के हित की रक्षा का धर्म निभाते हुए प्राप्त हो :

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु॥

(पत्रा ११०५)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी परमात्मा के सर्वश्रेष्ठ उपासक और सर्वश्रेष्ठ वीर भी थे। गुरु साहिब की बाणी जापु साहिब में परमात्मा के इतने रूप दर्शाये गये हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की गई थी। जापु साहिब में परमात्मा के हर रूप की वन्दना की गई है जिससे परमात्मा की सर्वव्यापकता आश्चर्यजनक रूप से प्रकट होती है और परमात्मा में विश्वास को दृढ़ करती है। गुरु साहिब की भक्ति उस समय उत्कर्ष पर जा पहुंची थी जब सरसा नदी के किनारे वैरी फौज आक्रमण के लिये तैयार हो रही थी, किन्तु उससे बेपरवाह गुरु साहिब आंखें बंद कर, शांतचित्त नितनेम कर रहे थे। परिस्थिति और समय कैसा भी रहा हो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उपासना की अपनी नियत मर्यादा को कभी भंग नहीं होने दिया।

नौ वर्ष की आयु में गुरुआई पर आसीन होने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सामने जैसी विकट चुनौतियां और परिस्थितियां थीं उनका इतिहास में दूसरा कोई उदाहरण नहीं मिलता। सबसे पहली चुनौती स्वयं को संयम और सहज में रखना था। पिता श्री गुरु तेग बहादर जी का जिन निर्मम परिस्थितियों में बलिदान हुआ था उससे पूरा मानव समाज हतप्रभ और शोक संतप्त हो गया था। दूसरी ओर यह धर्म की अभूतपूर्व विजय भी थी। इसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्वयं कलमबद्ध किया है :

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान॥'
(बचित्र नाटक)

श्री गुरु तेग बहादर जी का दिल्ली में बलिदान अपने तन को निरर्थक मान कर दिल्ली के बादशाह पर ऐसा करारा आघात करने जैसा था जिससे उसका सारा अहंकार चूर-चूर हो गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसमें शोक और हर्ष दोनों के दर्शन किये :

है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक॥

(बचित्र नाटक)

जिन्हें श्री गुरु तेग बहादर जी से प्रेम था, किन्तु धर्म के मर्म तक नहीं पहुंच पाये थे, वे गुरु साहिब के न रहने से दुखी हो गये। जिन्हें जीवन के सार का ज्ञान था वे श्री गुरु तेग बहादर साहिब की वन्दना करते हुए धर्म की विजय का अनुभव कर रहे थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हर्ष और शोक दोनों से ऊपर उठे हुए थे, इसलिये बड़े ही सहज भाव से उन्होंने अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर जी के शीश

को भाई जैता जी से ग्रहण किया और अंतिम संस्कार किया। उनके सामने भविष्य की योजनायें थीं जो धर्म की मर्यादा के लिये आवश्यक थीं। औरंगजेब के अत्याचार बढ़ते जा रहे थे और भारतीय समाज विभक्त था। जिन पर धर्म एवं समाज का भार था वे मौन थे और आम जन त्रस्त व हताश। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सामाजिक परिदृश्य को पूरा का पूरा बदलने का निर्णय लिया और बिना प्रतीक्षा किये इसकी तैयारी आरंभ कर दी। गुरु साहिब जानते थे कि जन-चेतना जाग्रत किये बिना यह संभव नहीं है। श्री गुरु नानक साहिब द्वारा दिखाई राह पर चलते हुए ही उन्होंने इसके लिये ज्ञान, भक्ति और शक्ति तीनों का समन्वित उपयोग किया।

ज्ञान : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जानते थे कि धर्म की रक्षा के लिए अंतर चेतना आवश्यक है। श्री गुरु रामदास साहिब के भी वचन थे कि ज्ञान के बिना मनुष्य निष्प्राण है— *''अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि॥''* श्री गुरु अरजन साहिब ने वचन किये थे— *''गिआन अंजनु जा की नेत्री पड़िआ ता कऊ सरब प्रगासा॥''* ज्ञान धारण करने वाले को धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, सत्-असत् की पहचान होने लगती है और उसके सारे भ्रम दूर हो जाते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को ज्ञात था कि बनारस धर्म ज्ञान का केंद्र है इसलिये उन्होंने प्रमुख सिक्खों को बनारस भेज कर संस्कृत भाषा सीखने और धर्म-ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त करने को कहा। उन्होंने प्रमुख ग्रन्थों के अनुवाद भी करावाए, ताकि सिक्खों को धार्मिक परिदृश्य का विस्तृत अवलोकन करने योग्य बनाया जा सके। पाउंटा साहिब और श्री अनंदपुर साहिब में उन्होंने हिन्दुस्तान के प्रमुख विद्वानों, कवियों को बुलाया और उनसे श्रेष्ठ साहित्य की रचना करवाई। पाउंटा साहिब और श्री अनंदपुर साहिब धर्म ही नहीं साहित्य व ज्ञान के प्रमुख केंद्र बन गये। ज्ञान का निर्झर प्रवाह बहा, जिससे अंतर्मन प्रफुल्लित हो उठा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अनेक भाषाओं, बोलियों के ज्ञाता और सर्वोत्कृष्ट रचनाकार थे। उन्होंने अनके बाणियां उच्चारण की। बाद में दुर्भाग्यवश गुरु साहिब द्वारा सृजित गुरमत साहित्य का बड़ा भाग सरसा नदी में बह गया जो मानव सभ्यता की बहुमूल्य धरोहर था। जो बाणी आज उपलब्ध है उनमें जापु साहिब, अकाल उसतत, बचित्र नाटक, चंडी चरित्र, गिआन प्रबोध, जफरनामा आदि बाणियां अध्यात्म के विस्मयकारी संसार में ले जाकर भावना से भरपूर कर देने वाली हैं। गुरु साहिब कवियों, विद्वानों का पूरा आदर-सम्मान करते थे और उन्हें उनकी रचनाओं के लिये पुरस्कृत भी किया करते थे। ज्ञान का यह संचार सिक्खों को आत्मविश्वास से भरने वाला सिद्ध हुआ।

भक्ति : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सिक्खों को आडंबर, पाखंड से दूर कर उनके मन को परमात्मा से जोड़ना चाहते थे। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा की कृपा को मन की प्रेम-भावना से ही प्राप्त किया जा सकता है। संसार में बहुत-से लोग धर्म-कर्म कर रहे हैं किन्तु परमात्मा की कृपा के बिना उनका कोई मूल्य नहीं है। कई राजा-महाराजा हैं, जिन्होंने बड़े-बड़े राज्य स्थापित कर लिये, बड़े शूरवीर हैं, पराक्रमी हैं, किन्तु परमात्मा

की बन्दगी के बिना उनका भी ऐसे ही अंत हो जाना है। विभिन्न शक्तियां हैं, पर सबसे बड़ी परमात्मा की शक्ति के आगे सब बेबस हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि संसार में उसी का आदर-स्थान है जो परमात्मा से मन को जोड़ रहा है। गुरु साहिब की प्रेरणा थी कि गुरसिक्ख की भक्ति का उद्देश्य आवागमन से मुक्ति होना चाहिये, जिसे ढोंग, कर्मकांड से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके लिये परमात्मा के चरणों में ध्यान लगाना पड़ता है। गुरु साहिब ने जब खालसा की साजना की तो सिक्खों के लिये अनेक मर्यादाओं की घोषणा की। ये मर्यादायें जीवन को संयमित करने वाली और परमात्मा से जोड़ने वाली थीं। जीवन में मर्यादायें निभाना आसान नहीं होता। इसके लिये आत्मबल होना चाहिये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा बनाने से पहले सिक्खों को सशक्त बनाने का उपाय किया। उन्होंने लोहे के बाटे में जल डाल कर उसमें बताशे डाले और खंडे से जल को चलाते हुए गुरबाणी का पाठ किया। कहते हैं कि बाटे में बताशे माता जीतो जी ने डाले थे। इसे गुरु साहिब ने 'अमृत' कहा। जल को श्री गुरु नानक साहिब ने 'पिता' कहा है। यह प्रवाहमान निर्मलता का भी प्रतीक है। इसमें डाले गये बताशे सद्गुणों के प्रतीक थे। इसे तैयार करते हुए पढ़ी गई गुरबाणी भक्ति-भावना को दृढ़ करने की शक्ति थी। गुरु साहिब ने सबसे पहले उन पांच सिक्खों को अमृत-पान कराया जो उनके आदेश पर अपना शीश देने को तैयार हो गये थे। उन्हें सिक्ख इतिहास में पिआरे अर्थात् गुरु के पांच विशेष प्यारे गुरसिक्ख कह कर आदर से स्मरण किया जाता है। गुरु साहिब ने ऐसा कर यह संदेश दिया कि धर्म के मार्ग पर भावना के साथ-साथ समर्पण और प्रतिबद्धता भी होनी आवश्यक है।

शक्ति : अज्ञानतावश और भ्रमवश श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को कुछ लोग शक्ति के प्रतीक के रूप में देखते हैं। गुरु साहिब ने जब खालसा तैयार किया तब उसे पांच ककार धारण करने का आदेश दिया। इनमें एक कृपाण भी है। इससे यह अवधारणा बना ली जाती है कि गुरु साहिब ने सिक्खों को सशस्त्र किया है। शस्त्र तो बहुत पहले ही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने स्वयं भी धारण कर लिये थे और विधिवत सेना का भी गठन किया था। वह सेना श्री गुरु हरिराय साहिब और श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के समय भी विद्यमान थी। श्री गुरु तेग बहादर जी स्वयं बहादुर योद्धा थे और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ युद्ध में भाग ले चुके थे। वे रहते भी योद्धाओं की तरह थे। जब वे ऐतिहासिक बलिदान के लिये दिल्ली गये तब भी घोड़े पर सवार होकर एक राजा, एक सेनापति की तरह निकले थे। शस्त्रों और रण-क्षेत्र की वीरता से सिक्खों का पुरातन रिश्ता है जिसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्थायी चरित्र बना दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने स्पष्ट किया था कि उनकी तेग गरीब की रक्षा के लिये है। गुरबाणी में शक्ति को व्यापक सन्दर्भों में देखा गया है। श्री गुरु नानक साहिब ने इसे परमात्मा-प्रेम में तन, मन के संपूर्ण समर्पण के रूप में देखा था। श्री गुरु नानक साहिब ने सच्ची वीरता और वीरता में जान न्यौछावर करना उसे बताया जो परमात्मा की दृष्टि में स्वीकार्य हो अर्थात् धर्म, सच के लिये हो— *''मरणु मुणसां*

सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो॥'' अपने विकारों को मारने वाले, परमात्मा की भक्ति में जीवन लगा देने वाले को भी शूरवीर कहा गया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को पांच ककारों के रूप में जो शक्ति प्रदान की वह गुरबाणी के अनुरूप है। केश सिक्ख के परमात्मा पर विश्वास और भावना के प्रतीक हैं। कंघा संयम और सहज का प्रतीक है। लोहे का कड़ा सिक्ख के सिद्धांतों और मूल्यों के प्रति समर्पण व प्रतिबद्धता का प्रतीक है। कृपाण मानव समाज को धर्म और सच के लिये आश्वस्त करने वाली है। कछहरा विकारों पर विजय को प्रकट करने वाला है। गुरु साहिब ने शंका करने वालों को स्वयं ज़फ़रनामा में उत्तर दिया है कि उनकी तेग तब उठती है जब धर्म और सच को बचाने का कोई विकल्प न रह जाये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी शक्ति के नहीं, संपूर्ण शक्ति के प्रतीक थे, इसीलिये उन्हें संत-सिपाही का अनूठा विशेषण भी दिया गया। गुरु साहिब ने खालसा को इस अद्भुत शक्ति से परिपूर्ण किया, तभी खालसा एक अनोखे मानव समाज के रूप में प्रकट हुआ। चमकौर के युद्ध में जब सामने दस लाख सेना, सभी तरह के अस्त्रों, शस्त्रों, तोपों से लैस थी, तब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ साहिबजादा अजीत सिंघ जी, साहिबजादा जुझार सिंघ जी और मात्र चालीस सिक्ख ही थे। ऐसे में गुरु साहिब द्वारा अमृत-पान कर भरी गई संपूर्ण शक्ति ही प्रकट हुई थी, जिससे सिक्खों ने इतनी विशाल फ़ौज के दांत ही नहीं खट्टे किये, उनके हौसले भी तोड़ दिए थे। खालसा वास्तव में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ही रूप बन कर उभरा था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्देश्य खालसा के माध्यम से ज्ञान, भक्ति और शक्ति का राज्य कायम करना था, जिसे 'खालसा राज्य' भी कहा गया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने सांसारिक जीवन के अंतिम क्षण तक खालसा राज्य की स्थापना को साकार रूप देने में लगे रहे। गुरु साहिब जब नांदेड़ साहिब पहुंचे, वहां भी उन्होंने धर्म और मानव-हित को आगे रखा। उनके उपदेशों और प्रेरणा से हजारों स्थानीय लोग अमृत-पान कर सिंघ सज गये। नांदेड़ साहिब में ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई पर आसीन कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मानव सभ्यता के इतिहास का वह स्वर्णिम अध्याय लिखा जिससे श्रेष्ठ कोई कल्पना नहीं की जा सकती। आज श्री गुरु ग्रंथ साहिब का जिस तरह सम्मान किया जाता है और जिस तरह मर्यादा निभाई जाती है उसे देख कर अन्य धर्मावलंबी आश्चर्यचकित हो जाते हैं। यह आदर और मर्यादा सिक्खों के रक्त में शामिल है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ऐसे राज्य के शहंशाह हैं जहां ज्ञान, भक्ति और धर्म-बल की मुद्राएं चलती हैं। ऐसा शहंशाह न कोई हुआ, न कोई होगा। ज्ञान, भक्ति और धर्म-बल से ही निर्मलता, शुद्धता उत्पन्न होती है, जिसमें से खालसा नामक पंथ का उद्भव होता है। आज के काल में भी ऐसे ही राज्य की आवश्यकता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : क्रांतिकारी के रूप में

*-डॉ. परमजीत कौर**

अद्वितीय व्यक्तित्व के स्वामी, दुष्ट-दमन, उच्च कोटि के सेनानायक, सक्षम समाज-सुधारक, श्रेष्ठ क्रांतिकारी, त्याग तथा बलिदान की मूर्ति, नौ वर्ष की आयु में अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को शहादत के लिए भेजने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म पटना शहर में २३ पौष, संवत् १७२३ तद्नुसार २२ दिसंबर, सन् १६६६ को हुआ। आप जी के जन्म के समय श्री गुरु तेग बहादर साहिब बंगाल के ढाका शहर में थे। सन् १६७० में श्री गुरु तेग बहादर साहिब का मिलाप श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ हुआ। छोटी आयु में ही आप जी में नेतृत्व के गुण प्रकट होने लगे थे। जब आप अपने साथियों के साथ खेलने के लिए निकलते थे तो स्वत: ही बालकों का सारा समुदाय आपको अपना सरदार मान लेता था। बचपन से ही आप जी में शूरवीरों वाली रुचि दिखायी देने लगी थी। आप अपने साथियों को दो टोलियों में विभाजित कर परस्पर युद्ध करवाते थे। सन् १६७४ में कश्मीरी पंडितों द्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समक्ष औरंगज़ेब के अत्याचार के विरुद्ध फरियाद करने पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी आत्मिक उच्चता का प्रमाण दिया। आप जी ने सहमी हुई हिंदू जनता को भय से मुक्त करने के लिए अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को कुर्बान होने के लिए भेज दिया। जब औरंगजेब के आदेश से श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद किया गया तो आपकी आयु लगभग नौ वर्ष थी।

धर्म प्रचार का कार्य-क्षेत्र बढ़ाने के लिए तथा ब्राह्मणों के आधिपत्य को समाप्त करने के लिए गुरु जी ने सिक्खों को संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। पंडित रघुनाथ दास के पास पांच सिक्खों को संस्कृत पढ़ने के लिए भेजा। उन सिक्खों में कोई भी ब्राह्मण वर्ण का न होने के कारण पंडित ने विद्या देने से इन्कार कर दिया।

गुरु जी के विचार क्रांतिकारी थे। संस्कृत पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मणों का है, इस अवधारणा का खंडन करते हुए आप जी ने पांच सिक्खों को उदासी वस्त्र पहनाकर बनारस संस्कृत पढ़ने के लिए भेज दिया। वहां वे कई वर्ष तक संस्कृत पढ़ते रहे। अमृत की दीक्षा लेने के बाद उनके नाम भाई राम सिंघ, भाई करम सिंघ, भाई गंडा सिंघ, भाई वीर सिंघ तथा भाई शोभा सिंघ वर्णित हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन का मुख्य उद्देश्य लोगों में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें जुल्म, अत्याचार तथा बुराइयों के विरुद्ध डटकर

**६२०, गली नंबर १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

मुकाबला करने के योग्य बनाना था, उनके जीवन में इंकलाब लाना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें कई युद्ध लड़ने पड़े, क्योंकि मुगलों के साथ-साथ हिंदू (ब्राह्मण, क्षत्रिय) भी आपके उद्देश्य को न समझने के कारण आपके विरुद्ध हो गए थे तथा मुगल ताकत के साथ मिल गए थे। वे यह सोचने लगे थे कि सिक्खी के फलने-फूलने से उनके अधिकार समाप्त हो जायेंगे।

अपने दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पद-चिन्हों पर चलते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शस्त्र-विद्या तथा घुड़सवारी की और सिक्ख नौजवानों में रुचि पैदा की। अनेक नौजवान श्री अनंदपुर साहिब में एकत्र होने शुरू हो गये। वीर रस से पूर्ण कविताओं से नौजवानों में उत्साह पैदा किया जाता था। १६८२ ई. में गुरु साहिब ने रणजीत नगाड़ा तैयार करवाया। इस नगाड़े पर चोट लगने पर नौजवान आलस्य त्यागकर जोश से भर जाते थे।

अक्तूबर, सन् १६८४ में जब गुरु साहिब श्री अनंदपुर साहिब से चले तो उनके साथ ५२ विद्वान कवि तथा ५०० के करीब शस्त्रधारी सिक्ख थे। औरंगज़ेब को खुश करने के लिए पहाड़ी राजाओं द्वारा गुरु साहिब पर आक्रमण करने के कारण भंगाणी का युद्ध हुआ, जिसमें सारे पहाड़ी हिंदू राजाओं की फौज उन साधारण लोगों से पराजित हो गयी जिनको वे सदियों से दबाते आ रहे थे। इस युद्ध ने सरहिंद तथा दिल्ली के सरकारी क्षेत्रों में हलचल मचा दी। दबे-कुचले एवं सहमे हुए लोगों की वीरता ने ब्राह्मणों तथा हिंदू रजवाड़ों की नींद उड़ा दी। जनता की जागृति मुगल ताकत को खतरे की घंटी प्रतीत होने लगी। सिक्ख जत्थेबंदी को मज़बूत करने के लिए गुरु साहिब ने शस्त्रों के निर्माण-कार्य को भी प्रारंभ करवा दिया।

सिक्खों को होली के रंगों तथा उससे जुड़ी कुरीतियों से हटाकर शस्त्र-विद्या के अभ्यास में लगा दिया। होली को होला का रूप देकर उन दिनों तीर तथा तेग के मुकाबले करवाये जाने लगे। होली के पुरातन संस्कारों के स्थान पर शबद-कीर्तन के रंग भर दिए।

अत्याचार को जड़ से समाप्त करने के लिए एक ऐसी कौम को तैयार करने का फैसला किया, जिसके हृदय में परमात्मा का प्रेम, आश्रय रहित लोगों के लिए दया की भावना तथा हाथों में जुल्म व अत्याचार का मुकाबला करने के लिए हथियार हो, जो जुल्म को समाप्त करने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगाने की हिम्मत रखती हो। इसके साथ ही सिक्ख कौम के आचार को ऊंचा रखने के लिए उनके जीवन को मर्यादित करने का फैसला किया।

सिक्ख संगत को सन् १६९९ में वैसाखी वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब में एकत्र होने के लिए विशेष रूप से निमंत्रण भेजे गए। हज़ारों की संख्या में स्त्री-पुरुष श्री अनंदपुर साहिब पहुंच गए। खुले मैदान में दीवान सजाया गया। गुरु साहिब ने भरे दीवान में पांच सिरों की मांग की। शीश अर्पण करने वालों को शीश तली पर रखने का मतलब समझाया कि गुरु की मति पर चलकर उच्च आचरण बनाना तथा अपने स्वार्थ के लिए

जीने के स्थान पर दूसरों के लिए जीने की भावना पैदा करना ही सिर हथेली पर रखना है। उन जांबाजों के जाति-वर्ण के भेद को मिटाकर उन्हें एक ही बाटे में से अमृत छकाकर यह आदेश दिया कि अमृतधारी सिक्ख अपने नाम के साथ 'सिंघ' शब्द अवश्य लगाएं। सर्वप्रथम अमृत-पान करने वाले पांच सिक्ख पांच प्यारे कहलाए। इस प्रकार अमृत की अमूल्य दात देकर खालसा पंथ की सृजना की तथा समझाया कि जात-पांत, भेदभाव, मेर-तेर, नफ़रत, संकीर्णता, भ्रम, पाखंड, लोकाचार आदि का खालसे के जीवन में कोई स्थान नहीं है :

खालस खास कहावै सोई।
जा के हिरदे भरम ना होई।
भरम भेख ते रहै निआरा।
सो खालस सतिगुरू हमारा॥ (श्री गुर सोभा)

गुरु जी ने खालसे का सीधा सम्बंध परमात्मा से जोड़ दिया और कहा कि खालसा अकाल पुरख की फौज है :

खालसा अकाल पुरख की फौज।
प्रगटिओ खालसा परमातम की मौज।
(सरब लोह ग्रंथ)

खालसे की जीत अकाल पुरख की जीत है। यह बात सदैव याद रहे इसलिए आदेश दिया कि एक-दूसरे से मिलते समय 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तहि' बोलकर अभिवादन करें। यह मानवता के इतिहास में एक क्रांतिकारी युग का आरंभ था। अमृत की दात देकर सिक्खों के अंदर स्वाभिमान, निडरता तथा आत्मविश्वास की भावना पैदा कर उनकी कायाकल्प कर दी; उन्हें जीवन जीने का नया ढंग सिखाया।

खालसा पंथ की सृजना के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पांच प्यारों से स्वयं अमृत की दात प्राप्त की तथा खालसे के साथ अपनी अभेदता प्रकट की। संसार के किसी भी धर्म में किसी गुरु, पैगंबर, पीर आदि ने अपने शिष्य, चेले या मुरीद के साथ ऐसी अभेदता प्रकट नहीं की। भाई गुरदास सिंघ जी का फरमान है :

वह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा
वरीआम इकेला।
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला॥
(वार ४१:१७)

आपने खालसे को अपना इष्ट, मित्र, सखा, सज्जन आदि कहकर सम्मान ही नहीं दिया बल्कि उसे अपना रूप स्वीकार किया:

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे महि हौं करौं निवास।
खालसा मेरो मुख है अंगा।
खालसे के हौं सद सद संगा।
खालसा मेरो इषट सुहिरद।
खालसा मेरो कहीअत बिरद।
खालसा मेरो पछ अर पाता।
खालसा मेरो सुख अहिलादा। (सरब लोह ग्रंथ)

हिंदू समाज ब्राह्मणों का मोहताज बना रहता था। कर्मकांड के जाल में फंसा हुआ वह धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों के समय ब्राह्मणों की सेवा एवं पूजा करने के लिए बाध्य था। श्री गुरु गोबिंद

सिंघ जी के द्वारा अमृत छकाये जाने से तथा उनके उपदेशों से प्रभावित होकर उन लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। उनका मन जागृत हो गया, वर्णगत भेदभाव मिट गया। वे ब्राह्मणों द्वारा फैलाए गए भ्रम-जाल से बाहर निकलने लगे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समझाया कि सेवा उनकी करनी चाहिए जो देश, कौम तथा मानवता के हित में स्वयं को अर्पण कर दें। गुरु जी ने जनता को प्रबुद्ध करने के लिए स्वयं बाणी उच्चारण की तथा सुचेत किया कि परमात्मा किसी विशेष स्थान आदि पर नहीं है, परमात्मा तो प्रत्येक स्थान पर है, सर्वव्यापक है। यह सारा संसार कूड़-क्रिया में उलझा हुआ है। कोई पत्थरों को पूजा के लिए साथ लिए फिरता है, कोई बुतों को परमात्मा समझकर पूज रहा है, तो कोई कब्रों को पूजने के लिए जा रहा है :

काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंग गरे लटकाइओ॥
काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाह को सीसु निवाइओ॥
कोऊ बुतान को पूजत है पसु
कोऊ म्रितान को पूजन धाइओ॥
कूर क्रिआ उरझिओ सभही जग
स्री भगवान को भेद न पाइओ॥ (सवैये)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरसिक्खों को ताकीद की कि जब तक गुरु का सिक्ख पाखंड से रहित है, व्यर्थ की रीतियों-कुरीतियों से बचा हुआ है, तब तक वह खालसा है, मेरा सिक्ख है। पाखंड में फंसे हुए सिक्ख में मेरा विश्वास नहीं है :

जब लग खालसा रहे निआरा।
तब लग तेज दीओ मैं सारा।
जब इह गहै बिपरन की रीत।
मै न करों इन की प्रतीत। (सरब लोह ग्रंथ)

अवगुणों से दूर करने हेतु गुरु साहिब ने खालसा के लिए खालिस-पवित्र जीवन जरूरी बताया। अमृतधारी रहित मर्यादा का पालन करने वाले, पवित्रता की मूर्ति, छल-कपट से रहित, विकारों से हीन, पाखंड-विरोधी, प्रभु-प्रेम में रंगे हुए व्यक्तित्व का नाम ही खालसा है :

जागत जोति जपै निस बासुर
एक बिना मन नैक न आने॥
पूरन प्रेम प्रतीति सजै ब्रत
गोर मढ़ी मठ भूल न मानै॥
तीरथ दान दया तप संजम
एकु बिना नहि एक पछानै॥
पूरन जोति जगै घट मै
तब खालिस ताहिं न खालिस जानै॥५७॥

गुरु जी ने हीन-भाव से ग्रस्त लोगों को जगाया तथा समझाया कि सबकी एक ही जाति है। सारे केवल मनुष्य हैं। सबकी शक्ल अलग-अलग है, देश, वेश तथा बोली अलग है, मगर रूप सबका एक-सा है, एक जैसी आंखें हैं, एक जैसे कान हैं, एक-सा शरीर है तथा शरीर के अंदर एक ही परमात्मा की ज्योति है, फिर भिन्न-भेद कैसा ?

हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो॥
करता करीम सोई राजक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो॥...

एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सभै एक ही बनाउ है ॥

(अकाल उसतति)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लोगों को मानसिक गुलामी से आज़ाद कराने के साथ-साथ उन्हें सदा चढ़दी कला में रहना सिखाया तथा *''निसचै कर अपनी जीत करों''* का मंत्र दृढ़ करवाया।

प्रसिद्ध विद्वान गार्डन के शब्दों में— ''जनता के मुर्दा ढांचे में जीवन की नई लहर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के उपदेशों ने डाली। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में धार्मिक नेता, शहंशाह, बलवान् योद्धा तथा उच्च नीतिवान वाले सारे गुण मौजूद थे।'' *(जीवन-बिरतांत श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी, प्रो. साहिब सिंघ, पृष्ठ २२७)*

खालसा पंथ की सृजना के बाद एक ऐसी मज़बूत जत्थेबंदी बन गयी जो तथाकथित उच्च जाति के लोगों तथा अत्याचारी राजाओं की आंखों की किरकिरी प्रतीत होने लगी तथा उसे तोड़ने के यत्न आरंभ हो गये। किसी न किसी बहाने से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ युद्ध किये गए, मगर गुरु साहिब की ओर से कभी भी पहले हमला नहीं किया गया। गुरु जी कोई अलग राज्य कायम करना नहीं चाहते थे और न ही किसी क्षेत्र या वस्तु पर कब्ज़ा करना उनका मंतव्य था। यही कारण था कि मुगल फौज के कई जरनैल भी गुरु साहिब से प्रभावित होकर विरोध छोड़ देते थे। सैद खान श्री अनंदपुर साहिब की तीसरी लड़ाई में गुरु जी की निरवैरता देखकर मुगल फौज का साथ छोड़कर चला गया तथा सैद बेग ने चमकौर साहिब के युद्ध के समय मुगल फौज का साथ छोड़ा।

सन् १७०४ में औरंगज़ेब की आज्ञा से चार राज्यों की फौज ने श्री अनंदपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया। एक महीने तक युद्ध कर दस लाख सैनिकों वाले शत्रु दल को यह एहसास हो गया कि उनकी फौज उन सिंघों को दबा नहीं सकी जिनकी संख्या केवल दस हज़ार के लगभग थी। फलस्वरूप शत्रु सेना ने नगर को चारों ओर से घेर कर नाकाबंदी कर दी। छः-सात महीने तक वे सिंघ, जिनमें अधिकतर तथाकथित उच्च जाति की दृष्टि में कंगाल, नाई, झीवर, बढ़ई, जाट आदि थे, अपने से सैकड़ों गुना अधिक शत्रु दल से मुकाबला करते रहे। वे रसद के समाप्त हो जाने तथा भूख-बीमारियों जैसी आपदाओं से घिरकर भी डटे रहे। शत्रु द्वारा छल-कपट का आश्रय लेकर श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली करवाए जाने पर चारों तरफ दस लाख के करीब शत्रु सेना के बीच में से डेढ़ हज़ार सिंघों का जान हथेली पर रखकर निकलना तथा चमकौर की गढ़ी में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दो साहिबजादों एवं ४० सिंघों द्वारा युद्ध-कला का जौहर दिखलाना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के क्रांतिकारी विचारों का ही परिणाम था। श्री गोकुल चंद नारंग के शब्दों में— ''श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्रभावित होकर ऐसे मनुष्य भी रण-क्षेत्र के योद्धा बन गए जिन्होंने कभी शस्त्रों को हाथ भी नहीं लगाया था या कंधे पर बंदूक रखकर भी नहीं देखी

थी। तथाकथित महरे (कहार), धोबी तथा नाई फौज के जरनैल बन गए। उनके सामने बड़े-बड़े राजा तथा नवाब भी आने से घबराने लगे।'' *(उक्त, पृष्ठ २२९)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हीन भावना से ग्रस्त, प्रताड़ित लोगों में आत्मविश्वास जगाकर उन्हें केवल समानता का अधिकार ही नहीं दिया, वरन् सम्मान भी दिया और कहा :

जुद्ध जिते इनही के प्रसादि,
इनही के प्रसादि सु दान करे॥
अघ अउघ टरे इनही के प्रसादि,
इनही की क्रिपा फुन धाम भरे॥
इनही के प्रसादि सु बिदिआ लई,
इनही की क्रिपा सभ सत्रू मरे॥
इनही की किपा के सजे हम हैं,
नहीं मो सो गरीब करोर परे॥

साहिबज़ादों की शहादत की प्रतिक्रियास्वरूप सिक्खों के मन में शासक वर्ग के प्रति रोष तथा नफ़रत की आग भड़कनी स्वाभाविक थी। गुरु साहिब ने धैर्यपूर्वक जत्थेबंदी को मजबूत करने तथा उचित अवसर का इंतजार करने का परामर्श दिया। औरंगजेब द्वारा संधि के लिए पत्र भेजने पर उसके उत्तर में 'जफ़रनामा' अर्थात् 'विजय-पत्र' लिखकर भाई दया सिंघ के हाथों भेजा, जिसमें उसे यह आभास कराया कि पहाड़ी राजाओं तथा उसके जरनैलों के नीच कर्म हुकूमत के नाश का कारण बन सकते हैं। गुरु जी ने उसे ताड़ना करते हुए कहा कि ''क्या हुआ जो मेरे चार पुत्र शहीद हो गए हैं, कुंडलीदार नागरूप खालसा पंथ चढ़दी कला में विद्यमान है।''

गुरु जी के 'जफ़रनामा' का औरंगज़ेब पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह बीमार हो गया तथा सन् १७०७ में उसकी मृत्यु हो गयी। उस समय के हालात को देखते हुए सिक्खों का नेतृत्व करने के लिए गुरु साहिब ने अद्वितीय ढंग से योग्य वीर सेनानायक का चुनाव किया। गुरु जी ने करामातों के चक्कर में फंसे हुए, अहंकार के मद में मस्त, अपनी असीम शक्ति का दुरुपयोग करने वाले माधोदास को अपने क्रांतिकारी विचारों से कल्याणकारी मार्ग का पथिक बनाकर उसकी शक्तियों को सही दिशा प्रदान की। गुरु जी के दैदीप्यमान अद्वितीय व्यक्तित्व से प्रभावित, मन्त्र-मुग्ध हुए क्षमाप्रार्थी माधोदास को सिक्ख मर्यादा के अनुसार अमृत छकाकर बाबा बंदा सिंघ बहादर बना दिया, जिन्होंने चपड़चिड़ी के युद्ध में खालसाई सेना का नेतृत्व करते हुए वज़ीर खान को मौत के घाट उतार दिया, सिक्ख राज्य की नींव रखी तथा श्री गुरु नानक देव जी व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम का सिक्का जारी किया।

इस प्रकार कह सकते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु नानक देव जी के मिशन को सम्पूर्णता के पथ पर पहुंचा दिया तथा अपने क्रांतिकारी विचारों एवं अमूल्य उपदेशों से मनुष्यों के अज्ञानतापूर्ण व अंधकारमयी जीवन में ज्ञान का प्रकाश किया।

अद्वितीय शहादत का दीप जलाने वाले बाबा दीप सिंघ जी शहीद

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

शहादत के रौशन चिराग अर्थात् उज्जवल दीप और शस्त्र व शास्त्र के धनी, शूरवीर योद्धा, अद्वितीय शहादत का दीप जलाने वाले, शहीद मिसल के जत्थेदार (प्रमुख) बाबा दीप सिंघ जी शहीद का जन्म माघ १४, संवत् १७३९ (सन् १६८२ ई.) को पिता श्री भगता जी तथा माता जीऊणी जी के गृह पहूविंड, जिला तरनतारन में हुआ। बचपन से ही बाबा जी सुडौल, सुंदर, सेहतमंद और ऊंचे कद के थे।

जब बाबा जी की उम्र १८ वर्ष की हुई, तब ये अपने माता-पिता के साथ श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन-दीदार करने के लिए गए। माता-पिता गांव लौट आए, परंतु बाबा दीप सिंघ जी वहीं रुक गए। वहां दशमेश पिता जी की छत्र-छाया व सेवा में रहने लगे। इन्हें दशम पातशाह जी के हाथों अमृत-पान करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनकी मनोवृत्ति आध्यात्मिक थी। इन्हें गुरु जी ने गुरबाणी-अध्ययन की शिक्षा दी और साथ में शस्त्र-संचालन में भी निपुण किया। गुरु जी की कृपा से २०-२२ वर्ष की आयु में बाबा जी युद्ध-कला में निपुण होकर वीर योद्धा बन गए। इन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा लड़े गए युद्धों में अपनी युद्ध-कला का बाखूबी प्रदर्शन किया। बड़े-बड़े विरोधी योद्धा इनसे भय खाने लगे। इनका नाम सुनकर ही उनके हृदय कांप उठते।

कुछ समय बाद बाबा दीप सिंघ जी अपने गांव पहूविंड चले आए। यहां आकर इन्होंने स्थानीय क्षेत्र के लोगों के बीच सिक्ख धर्म के प्रचार का काम अति निष्ठा व लगन के साथ करना शुरू कर दिया। विशेष तौर पर युवा वर्ग इनसे बहुत प्रभावित हुआ। इसके बाद बाबा जी पुन: अपने गुरु जी के पास सेवा हेतु उपस्थित हुए।

ये उच्च कोटि के विद्वान एवं अति गुणवान व्यक्ति थे। अपने रहबर, अपने गुरु जी का आदेश पाकर इन्होंने तलवंडी साबो श्री दमदमा साहिब (गुरु की काशी) जाकर सिक्खी का प्रचार एवं प्रसार करना शुरू कर दिया। यहीं इन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बीड़ (स्वरूप) तैयार की। तलवंडी साबो रहते हुए भाई मनी सिंघ जी के साथ मिलकर तैयार की गई पावन बीड़ के अलावा चार और पावन बीड़ें हस्तलिखित तैयार कीं।

ऐतिहासिक साक्ष्य है कि सन् १७०९ ई. में जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर जालिमों द्वारा गुरु-घर तथा गुरु-परिवार के साथ किए गए जुल्मों का हिसाब चुकता करने के लिए अर्थात् ज़ालिमों को सबक सिखाने के लिए पंजाब आए, उस समय बाबा दीप सिंघ जी ने भी सैकड़ों जांबाज़ों की फौज साथ लेकर उनका पूरा साथ दिया था। शूरवीर सिंघों ने शत्रुओं को जंग-ए-मैदान में करारी शिकस्त दी।

एक और ऐतिहासिक तथ्य है कि जब श्री गुरु

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन: ९८७२२-५४९९०*

गोबिंद सिंघ जी दक्षिण की ओर गए, तब वे बाबा दीप सिंघ जी को तलवंडी साबो की सेवा का कार्य सौंप कर गए थे। बाबा जी यहीं पर रहे और सिक्खी का प्रचार तथा गुरबाणी की व्याख्या कर सिक्ख प्रचार के इस केंद्र को चलाते रहे। भाई मनी सिंघ जी की शहादत के बाद बाबा दीप सिंघ जी ही प्रमुख और प्रसिद्ध विद्वान थे।

अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर अनेक बार आक्रमण किए। हर बार उसका रास्ता रोकने वाले, उसकी सेना को भारी क्षति पहुंचाने वाले तथा उसके द्वारा नियुक्त शासकों की गतिविधियों को चुनौती देने वाले सिक्खों से वह बहुत परेशान व दुखी था। वह सिक्खों को सख्त सबक सिखाना चाहता था। उसने क्रूर व ज़ालिम शासक जहान खान को लाहौर का गवर्नर नियुक्त किया तथा उसे ताकीद की कि वह सिक्खों के अस्तित्व को मिटाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दे।

ज़ालिम जहान खान ने अपने सैनिक जत्थे गांव-गांव भेज कर और सिक्खों को ढूंढ-ढूंढकर शहीद करवाना शुरू कर दिया। रणनीति के तहत सिक्ख गांव छोड़कर दूर जंगलों में चले गए। इसी दौरान जहान खान को किसी ने उकसाया कि जब तक श्री अमृतसर में सिक्खों का पवित्र सरोवर और श्री हरिमंदर साहिब कायम है, तब तक सिक्ख खत्म नहीं हो सकते। यहां से उन्हें नया जीवन, उत्साह और जोश मिलता है। वे पुन: अपने विरोधियों के सिर पर मौत बन मंडराने लगते हैं।

जहान खान ने सन् १७५७ ई. में श्री अमृतसर को अपना मुख्य निशाना बना लिया और सिक्खों के जज़बात कुचलने को श्री हरिमंदर साहिब की इमारत को ढहा दिया तथा पवित्र सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया। अब्दाली एवं जहान खान को क्या पता था कि इस घटना के बाद शूरवीर सिक्ख योद्धा विश्व इतिहास के पन्नों में अपनी लामिसाल शहादतों का एक और सुनहरी पन्ना जोड़ने वाले हैं; मानव-इतिहास को नया मोड़ देने वाले हैं।

श्री हरिमंदर साहिब के हुए अपमान का समाचार जब बाबा दीप सिंघ जी को मिला, तब उनके हृदय को सदमा पहुंचा। मस्तिष्क में क्रोध व आक्रोश की ज्वाला धधक उठी। सिक्ख पंथ के स्वाभिमान, गौरव, प्रतिष्ठा को बचाने का सवाल था। सच्चाई, निष्ठा, आस्था और धर्म को अहंकारियों, अधर्मियों, जालिमों ने ललकारा था। बाबा जी ने उसी समय श्री हरिमंदर साहिब की पवित्रता को ठेस पहुंचाने वालों के साथ दो-दो हाथ करने का निर्णय किया और आसपास के क्षेत्रों में सिक्खों को सूचना भेज दी। उनके व्यक्तित्व का बहुत ज्यादा प्रभाव था। उनकी आगवानी में सिक्ख तुरंत इकट्ठा होना शुरू हो गए। मालवा क्षेत्र से कूच करते समय खालसा दल के जांबाज़ों की संख्या पांच हजार से अधिक हो गई। इनमें वीर योद्धा जत्थेदार गुरबखश सिंघ अनंदपुरी भी शामिल हो चुके थे।

माझा क्षेत्र में दाखिल होते ही मझैल सिंघ भी उनके साथ आ मिले। बाबा दीप सिंघ जी ने अपने १८ सेर भारी खंडे से लकीर खींची और कहा, ''जो शहादत देने के लिए तैयार है, वह इस लकीर को पार करे।'' सभी सिक्ख लकीर पार कर गए तथा जयकारे गुंजाते हुए श्री अमृतसर की ओर बढ़ने लगे।

श्री अमृतसर की परिधि से पांच मील बाहर गांव

गोहलवड़ में जहान खान २० हज़ार सैनिक लेकर सिंघों के साथ युद्ध करने लगा। घमासान युद्ध हुआ। क्रोध व जोश में सिंघों ने ऐसा आक्रमण किया कि जहान खान की सेना के हौसले पस्त होने लगे। उसकी सेना पीछे हटने लगी। सिंघ शस्त्र-कला के ज़ौहर दिखाते हुए शहर के समीप आ गए। इस युद्ध में बाबा दीप सिंघ जी के सहायक भाई दिआल सिंघ ने जहान खान (जो हाथी पर बैठा हुआ था) का सिर काटकर उसे मौत के घाट उतार दिया। इस घटना का वर्णन भक्त लछमण सिंघ ने अपनी पुस्तक 'सिक्ख मास्टर्स' में किया है।

इसके बाद शहर के और निकट पुन: भयंकर युद्ध हुआ। यहां पठानी सेना के दूसरे सेनापति जमाल शाह ने बाबा दीप सिंघ जी को चुनौती दी कि वे उससे अकेले मुकाबला करें। ७५ वर्ष की वृद्धावस्था होने के बावजूद बाबा जी ने जमाल शाह की चुनौती को स्वीकार किया। इस समय तक शहर की गलियां खून तथा लाशों से भर चुकी थीं।

बाबा जी के साथी भाई धरम सिंघ, भाई खेमू सिंघ, भाई मान सिंघ और भाई राम सिंघ अन्य अनेक सिंघों सहित शहीद हो गए। बाबा दीप सिंघ जी गंभीर रूप से घायल हो गए, परंतु फिर भी वे लड़ते हुए आगे बढ़ते रहे। कुछ इतिहासकारों के अनुसार उनका शीश धड़ से अलग हो गया, लेकिन उनकी भक्ति की शक्ति का करिश्मा कहिए कि बाबा दीप सिंघ जी ने अपना प्रण पूर्ण करने हेतु अपना शीश बाएं हाथ की हथेली पर रख लिया और बिना शीश के दुनिया की एक अद्‌भुत, निराली लड़ाई का अद्वितीय करिश्मा दिखाते हुए श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा तक जा पहुंचे। यहां तक पहुंचते-पहुंचते अन्य पठान सेनापतियों में से साबर अली खान, रुस्तम अली खान तथा ज़बरदस्त खान भी मारे गए। उन्हें मारने वाले स्वाभिमानी सिंघ सरदार हीरा सिंघ एवं सरदार बलवंत सिंघ थे। जब इतने अधिक सेनापति मारे गए तो पठानी, अफगानी फौज के हौसले पूरी तरह से टूट गए और वे सभी श्री हरिमंदर साहिब का घिराव छोड़ भाग खड़े हुए। बाबा दीप सिंघ जी अद्वितीय साहस का पराक्रम दिखाकर, शहादत का दीप जलाकर परम पिता प्रभु के चरणों में विराजमान हो गए। शेष सिंघों ने विरोधी सेनाओं का अटारी तक पीछा किया। उनका जान-माल का बेहद नुकसान हुआ। वे अपना बहुत-सा सामान व शस्त्र-भंडार छोड़कर भाग गए।

बाबा दीप सिंघ जी जैसा वृद्ध सेनापति, जांबाज़ योद्धा, अदम्य साहस वाला शूरवीर, बहादुर विश्व के इतिहास में अन्य कोई नहीं मिलता। इनकी ला-मिसाल शहादत के उदाहरण कहीं नहीं मिलते। ऐसी शहादत को स्वास्थ्य विज्ञान की कसौटी पर परखा नहीं जा सकता, बल्कि आध्यात्मिक भक्ति, रूहानियत के आलोक में ही ऐसी शहादत के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

बाबा दीप सिंघ जी के शहीदी-प्राप्त स्थल पर इनकी यादगार बनी हुई है। जहां बाबा जी के पार्थिव शरीर का दाह-संस्कार किया गया वहां गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब, श्री अमृतसर में सुशोभित है।

धर्म और नैतिकता का मार्गदर्शक : ज़फ़रनामा

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

ज़फ़रनामा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की वह अनमोल बाणी है जो हमें गुरु जी के समय हुकूमत के साथ पैदा हुए टकराव की याद ताज़ा करवाती है। दसम ग्रंथ की बाणी बनने से पहले इस ऐतिहासिक दस्तावेज़ को उस चिट्ठी के रूप में देखा जाता था जो कि गुरु साहिब ने खिदराणा (श्री मुकतसर साहिब) की लड़ाई से पहले औरंगजेब को लिखी थी और जिसके माध्यम से गुरु जी ने छठे मुग़ल सम्राट की आत्मा को ज़ोरदार झटका दिया। इस चिट्ठी के माध्यम से गुरु साहिब ने औरंगजेब को अधर्म तथा अनैतिकता का रास्ता छोड़ कर धर्म और नैतिकता का पल्ला पकड़ कर आम लोगों को दुखों एवं कष्टों से राहत देने का उपदेश दिया। इस चिट्ठी को 'फतह की चिट्ठी' भी कहा जाता है। इसमें स्पष्ट रूप से जिन बातों का ज़िक्र आया है उनमें गुरु साहिब की साफ़ और स्पष्ट नीति एवं धर्म तथा नैतिकता के पक्ष को प्रकट करना प्रमुख हैं।

धर्म किसी भी व्यक्ति के जीवन का ज़रूरी अंग माना जाता है जो कि उसके विश्वास पर आधारित होता है। यह विश्वास व्यक्ति के अपने धार्मिक नेता या धर्म-ग्रंथ पर आधारित होता है। जब कोई व्यक्ति अपने धार्मिक नेता या धर्म-ग्रंथ का सहारा लेकर कोई बात करता है तो उसकी बात को प्रमाणिक और मानने योग्य समझा जाता है। ज़फ़रनामा में भी ऐसी ही बातों का ज़िक्र आया है जब औरंगजेब की फ़ौज के उच्चधिकारी गुरु साहिब को श्री अनंदपुर साहिब के किले में से बिना किसी नुकसान के बाहर जाने के लिए कुरान की कसमें खाते हैं। गुरु साहिब का उन पर विश्वास कर किले में से बाहर आ जाना, परन्तु मुग़ल फौज द्वारा कसमें तोड़ कर गुरु साहिब पर हमला करना इस बात की गवाही भरता है कि मुग़ल फौज धर्म के रास्ते से भटक कर केवल धर्म के बाहरी रूप का ही प्रदर्शन कर रही थी। वास्तव में वह धर्म की सही विचारधारा से भटक रही थी। ज़फ़रनामा के माध्यम से गुरु साहिब इन सब बातों पर रौशनी डालते हुए औरंगजेब को फिर धर्म के रास्ते पर लौटने के लिए कहते हैं :

कि बर सरि तुरा फ़रज़ कसमि कुरां ॥
ब गुफ़तह शुमा कार ख़ूनी रसां ॥ ७६ ॥

गुरु साहिब यह मानते हैं कि धर्म-ग्रंथ किसी भी धर्म का केंद्रीय बिंदु होता है और अपने धर्म-ग्रंथ द्वारा बताए मार्ग पर चलना धर्म के पैरोकारों का प्रमुख फ़र्ज़ है। जो लोग अपने धर्म-ग्रंथ को ज़रूरत पड़ने पर राजनीतिक और युद्धनीतिक दांव-पेच के लिए इस्तेमाल करते हैं वे लोग जहां समाज के लिए घातक सिद्ध होते हैं वहीं धर्म-ग्रंथ को भी अपमानित कर रहे होते हैं, क्योंकि कोई

**सिक्ख विश्व कोश विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला— १४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२*

व्यक्ति दूसरी बार उन लोगों द्वारा धर्म-ग्रंथ की कसम पर विश्वास नहीं करता। ज़फ़रनामा में गुरु साहिब स्पष्ट करते हैं कि यदि यह शक होता कि धर्म-ग्रंथ और ईमान रखने वालों के मन में जरा भी खोट है तो मैं अपनी प्यारी खालसा फ़ौज को यूं ही न मरने देता :

कसम मुसहफे ख़ुफ़ीयह हार ईं ख़ुरम ॥
न अफ़वाज अज़ीं ज़ेरि सुम अफ़गनम ॥ १८ ॥

धर्म-ग्रंथ की झूठी कसमें धर्म-ग्रंथ और समाज के वजूद के लिए भी ख़तरा साबित होती हैं, क्योंकि धर्म-ग्रंथ का प्रमुख काम मानवता का नेतृत्व और धार्मिक जीवन-मूल्यों की स्थापना होता है। यदि धर्म-ग्रंथ की कसमें खाकर इन्हें तोड़ा जाये तो धर्म-ग्रंथ का आदर-सम्मान लोगों के मन में से कम हो जाता है। यहां तक कि संबंधित धर्म-ग्रंथ के पैग़म्बर पर भी प्रश्न-चिह्न लग सकता है। गुरु साहिब कहते हैं कि मैं कुरान को इसलाम का पवित्र धर्म-ग्रंथ मानता हूं, परन्तु जब इसके पैरोकार इसकी झूठी कसम खाते हैं तो वे कुरान की शिक्षाओं के विपरीत चलते हैं। चाहिए तो यह था कि कुरान की कसमें खाकर किया प्रण निभाने के लिए वे अपनी जान भी दे देते तो भी कम था, मगर अपने धर्म-ग्रंथ द्वारा दिखाए धर्म और नीति के मार्ग को न छोड़ते :

हरां कस कि कउलि कुरआं आयदश ॥
न ज़ो कुशतनो बसतन बायदश ॥ २५ ॥

ज़फ़रनामा के माध्यम से गुरु साहिब बताते हैं कि मुग़ल फौज द्वारा जब कुरान की कसमें तोड़ी गईं तो हमारे लिए भी लड़ाई करने के अलावा अन्य कोई चारा नहीं था। गुरु साहिब यह मानते हैं कि यदि अहिंसक रहने तथा बातचीत के सारे प्रयास विफल हो जाएँ तो फिर जब्र और ज़ुल्म का जवाब देने के लिए कृपाण उठा लेनी बिलकुल जायज है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥ २२ ॥

श्री अनंदपुर साहिब और चमकौर साहिब की गढ़ी में जो ख़ून-खराबा हुआ उसका आधार मुग़ल फौज द्वारा खाई कुरान की झूठी कसम थी। न मुग़ल फ़ौज कुरान की कसम खाती, न गुरु साहिब किले में से बाहर आते और न ही जान-माल का इतने बड़े स्तर पर नुकसान होता। इस परिस्थिति में यदि गुरु साहिब को किला खाली करना भी पड़ता तो वे ऐसी योजना बनाते जिससे खालसाई फ़ौज का कम से कम नुकसान होता। जैसे गुरु साहिब चमकौर साहिब की गढ़ी में से दस लाख फ़ौज के घेरे के दौरान (सकुशल) बाहर निकल आए इसी तरह श्री अनंदपुर साहिब का किला भी कम से कम नुकसान के साथ खाली किया जा सकता था। गुरु साहिब की खालसा फ़ौज का बड़े स्तर पर नुकसान हुआ। इस सबके बावजूद भी खालसा फ़ौज ने मुग़ल फ़ौज का डट कर मुकाबला किया। इस मुकाबले में जहां खालसाई फ़ौज का नुकसान हुआ वहीं उन्होंने मुग़ल फ़ौज के बड़े-बड़े शूरवीरों और जरनैलों सहित बहुत-से फ़ौजी भी मार दिए :

हम आख़िर बसे ज़खमि तीरो तुफ़ंग ॥
दुसूए बसे कुशतह शुद बे दिरंग ॥ ३६ ॥

गुरु साहिब कहते हैं कि कुरान की झूठी कसम ही इस बड़े ख़ून-खराबे का कारण बनी। कुरान की झूठी कसम खाने वालों को गुरु साहिब न तो उसका कोई युद्धनीतिक दांव-पेच मानते हैं, न धर्म की

पालना, न धर्म-मर्यादा, न अल्लाह की पहचान और न ही मुहम्मद साहिब पर यकीन। यदि मुग़लई जरनैल धर्म की पालना करने वाले होते तो धार्मिक और नैतिक जीवन-मूल्यों को आँखों से ओझल न होने देते। धर्म की राह पर चलने तथा अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने की पहली शर्त यही है कि जिसे ईश्वरीय वाणी माना गया हो उस में दर्ज उपदेशों पर अमल किया जाये, न कि ईश्वरीय वाणी की झूठी कसम खाकर उससे इन्कारी हो जाना चाहिए। गुरु साहिब फरमान करते हैं :

शुमा रा चु .फ़रज़ असत कारे कुनी ॥
बमूजब नविशतह शुमारे कुनी ॥५३ ॥

गुरु साहिब बादशाह को उसके कुकर्मों से बचाना चाहते थे और इसी लिए उसे कहते हैं कि वह बिना किसी भी मध्यस्थ के सीधी बातचीत करे। धर्म और नीति से विहीन कुछ बातें तो बादशाह को ज़फ़रनामा के माध्यम से साफ़ कर देते हैं और बाकी बातों के लिए मुलाकात करनी चाहते थे। गुरु साहिब मुग़ल जरनैलों द्वारा की गई ज्यादतियों से अवगत करवा कर उन्हें सज़ा दिलानी चाहते थे, ताकि बादशाह अपने तख़्त की मान-मर्यादा को बहाल रखते हुए अल्लाह की दरगाह में शर्मिंदा न हो। फिर भी यदि बादशाह निष्पक्ष होकर बात नहीं करता और अपने जरनैलों का समर्थन करता है तो वह भी अधर्म और अनैतिकता की राह पर चलता है। इसलाम के अनुसार कयामत के दिन अल्लाह इस धरती पर आएगा। उस दिन सब मुर्दे उठ खड़े होंगे। उस दिन उनके कर्मों के हिसाब से अल्लाह उन्हें दोज़ख़ और बिहिश्त देगा। चाहे सिक्ख धर्म स्वर्ग-नरक में विश्वास नहीं रखता फिर भी गुरु साहिब औरंगजेब को ये सब बातें उसे उसके अपने धर्म के मुताबिक अमल करने, न करने की भूल अनुभव कराने के लिए लिखते हैं। गुरु साहिब उस दिन तक भी इंतज़ार करने को तैयार हैं। वे बादशाह को झकझोरते हुए कहते हैं कि खुदा की कचहरी में मैं भी उपस्थित होऊँगा। उस दिन वज़ीर खान के ज़ुल्मों और कुकर्मों के लिए तुझे भी गवाही देनी पड़ेगी :

कि मा बारगहि हज़रत आयम शुमा ॥
अज़ां रोज़ बाशी व शाहिद शुमा ॥८१ ॥

इस सबसे बचने के लिए बादशाह के लिए यह ज़रूरी है कि वह परमात्मा को सर्वोच्च मान कर उसकी अधीनता स्वीकार करे और मानवता के रास्ते पर चल कर बेगुनाहों एवं मासूमों के अधिकारों की रक्षा करे। धार्मिक जीवन-मूल्य, जो पैग़म्बर द्वारा निर्धारित किए गए हैं और जिन्हें धर्म-ग्रंथ में संभाल कर रखा हुआ है, उन्हें अमली जामा पहनाए, न कि उनकी झूठी कसमें खाकर चमकौर की जंग की तरह चालीस भूखे शूरवीरों पर बिना किसी कचहरी के मुकद्दमा चलाए; न कोई विशेष दोष निर्धारित किये बिना भूखे कुत्तों की तरह भारी लश्कर सहित उन पर टूट पड़े। इस तरह करना न तो मर्दानगी है और न ही यह दीन-धर्म के अनुकूल है। गुरु साहिब औरंगजेब को इसी किस्म का बादशाह मानते हैं जो कि अपनी ताकत या चुस्त-चालाकी व धोखे से तख़्त पर तो बैठा है मगर मानवीय जीवन-मूल्यों से खाली है :

शाहनशाह अउरंगज़ेब आल्लमीन ॥
कि दाराइ दौर असत दूर असत दीन ॥९४ ॥

ज़फ़रनामा में गुरु साहिब बादशाह को स्पष्ट

करते हैं कि अपने दीन का प्रचार करना बुरी बात नहीं, अपने दीन को फैलाना गलत नहीं, परन्तु यह सब कुछ करने के लिए तलवार का सहारा लेना किसी प्रकार भी उचित नहीं। अपने दीन को फैलाना और अपने पैग़म्बर की शिक्षाओं का प्रचार करना तब तक ही उचित है जब तक ऐसा करते हुए दूसरे दीन के लोगों का मान-सम्मान बरकरार रहे अर्थात् ज़बरदस्ती अपने मजहब का प्रचार करना भी मानवता और मानवी जीवन-मूल्यों को ठेस पहुंचाना है। दीन का प्रचार करते समय परमात्मा को हमेशा याद रखना चाहिए तो ही सही अर्थों में धर्म का प्रचार और प्रसार संभव हो सकता है :

कि ईं कारि नेक असत दी परवरी ॥
चु यज़दां शनासी ब जां बरतरी ॥८४॥

गुरु साहिब के अनुसार अनैतिकता और अधर्म की राह पर चलने वाला व्यक्ति कभी विजय हासिल नहीं कर सकता। विजय हमेशा उसी व्यक्ति की होती है जो परमात्मा का ओट-आसरा लेकर नीति और धर्म की राह पर चलता है। परमात्मा खुद अपने सेवक की हर मोड़ पर रक्षा करता है और उसे हर मुश्किल में से बाहर निकालता है। क्या हुआ यदि तेरी लाखों की फ़ौज ने धोखे से मेरे कुछ बच्चे (सिक्ख) और चार पुत्र शहीद कर दिए। फिर भी वे इनके जन्म-दाता (गुरु साहिब) को पकड़ने और मारने में असफल रहे हैं :

चिहा शुद कि चूं बच्चगां कुशतह चार ॥
कि बाकी बिमांदा सत पेचीदह मार ॥७८॥

गुरु साहिब का फौज के बेमिसाल घेरे में से बच कर निकल जाना ही धर्म और नैतिकता की जीत है। गुरु साहिब बादशाह से कहते हैं कि तुझे अपनी असंख्य फौज और असंख्य धन-दौलत पर घमंड है। यह घमंड व्यक्ति को अधर्म और अनैतिकता की राह पर ले जाता है। परमात्मा की रज़ा में रहने वाले व्यक्ति धर्म और नैतिकता से ज़रा भी विचलित नहीं होते। गुरु साहिब हर हाल में परमात्मा को याद करते और उस पर भरोसा रखते हुए बादशाह से कहते हैं :

कि ऊरा ग़रूर असत बर मुलकु माल ॥
हवा मा रा पनाह असत यज़दां अकाल ॥१०६॥

उपरोक्त विचारों से स्पष्ट है कि ज़फ़रनामा व्यक्ति को धर्म और नैतिकता की राह पर चलने का स्पष्ट संकेत देता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से पहले नौवें गुरु जी ने धर्म और नैतिकता की राह पर चलते हुए अपना शीश कुर्बान कर दिया। इसी राह पर चलते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का परिवार बिछड़ गया, पारिवारिक शहीदियां हुईं। सबसे प्यारे ख़ालसे को घोर कष्टों का सामना करना पड़ा, परंतु गुरु साहिब इस राह से कभी विचलित नहीं हुए।

ज़फ़रनामा गुरु साहिब के धर्म और नैतिकता के रास्ते पर चलने का दृढ़ संकल्प का सबूत पेश करता है। गुरु साहिब द्वारा दिखाई इसी राह ने खालसा पंथ को नयी दिशा प्रदान की और ख़ालसे ने आने वाले समय में अनेक ज़ालिम आँधियों के दौरान दृढ़ता के साथ धर्म एवं नीति की राह पर चलते हुए समाज का नेतृत्व किया। ज़फ़रनामा सिक्खों के लिए हमेशा इसी राह पर चलने का प्रेरणा-स्रोत बना चला आ रहा है और बना रहेगा।

श्री अनंदपुर साहिब की आरंभिक लड़ाइयां

– ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल (दिवंगत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज द्वारा सुसज्जित खालसा पंथ की बहुत चर्चा थी। दूर-दूर से संगत सुन कर आती और अमृत छक कर सिंघ सज जाती। पंजाब के निवासी ज्यादातर शस्त्रधारी ही होते थे। केश कटवाने का भी पंजाब में रिवाज़ नहीं था। गाँववासी ख़ास कर किसान जट्ट (जाट) लड़ाके स्वभाव के थे। उन्हें यह नया धर्म बहुत पसंद आया। सच्ची बात तो यह है कि पंजाब के जट्टों को इससे पहले कोई धर्म पसंद ही नहीं था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सिक्खी को उन्होंने तन-मन से धारण कर लिया। यह शस्त्रधारी सिक्खी उनके लहू में यहाँ तक बस गई कि आज 'जट्ट' और 'सिक्ख'— दोनों शब्द अलग-अलग करना कठिन हो गया है। रहित मर्यादा की कई कमज़ोरियों के बावजूद भी पंजाब का जट्ट, सिक्ख के बिना और कुछ नहीं।* सिक्खो में बहुसंख्या भी जट्टों की ही है। वैसे हर जाति-बिरादरी में से सिंघ सजे, परंतु उनमें से गिनती के श्रद्धालु थे, जो अपने बाकी साथियों से साहसी स्वभाव के मालिक थे।

हां, जाति-अभिमानी पंडित सिंघ सजने से झिझकते रहे। वे अमृत छकना चाहते थे, परन्तु तथाकथित निम्न जाति के लोगों के साथ मिल कर एक ही बाटे में नहीं। पीढ़ियों से चले आ रहे संस्कारों के कारण छूत-छात के बंधन तोड़ने की उनमें हिम्मत नहीं थी, अत: पंडितों में से बहुत कम लोगों ने अमृत छका।

पहाड़ी राजा श्री अनंदपुर आए

पहाड़ी राजाओं के कानों तक भी इस नये बने पंथ के बारे में खबरें पहुँची। गुरु महाराज ने जगह-जगह हुकमनामे भेजे और हर सिक्ख को अमृत छक कर सिंघ सजने का हुक्म दिया। गुरुदेव ने राजा अजमेर चंद तथा अन्य राजाओं को भी लिखा। बिलासपुर का राजा उस समय भीम चंद का पुत्र अजमेर चंद था। भीम चंद का निधन हो चुका था। कहलूर की रियासत बाकी रियासतों से बड़ी थी, इसलिए बाईधार के राजाओं का नेता कहलूर का हुक्मरान ही माना जाता था। अजमेर चंद के नेतृत्व में कुछ राजा श्री अनंदपुर साहिब आए। महाराज ने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया, जैसे हजूर हर सिक्ख का किया करते थे। राजा कई दिन तक श्री अनंदपुर साहिब रहे। उन्होंने गुरुदेव के शुभ विचार भी सुने, परन्तु अफ़सोस, राजा जात-पांत और छूत-छात के बंधनों से मुक्त न हो सके। गुरुदेव ने उन्हें सिंघ सजने के लिए बहुत

**The fact remains that the Khalsa was a compound of the Sikh and the Jat, the Guru had united the religious fervour of the Sikh with the warlike temper of the Jat.— Indu Bhushan Balnerjee, Vol. II, p. 125.*

प्रेरित किया, परन्तु दिल से चाहते हुए भी वे अमृत छकने के लिए तैयार न हुए। वे केवल दो शर्तों पर अमृत छकने के लिए तैयार थे। एक तो उनको सिक्खों से अलग अमृत छकाया जाए, ताकि उनका ऊँची जाति का घमंड बना रहे और दूसरा, उन्हें सिंघ सज कर भी देवी-देवताओं की पूजा करने की आज्ञा हो। ये दोनों शर्तें सिक्खी के मूलभूत उसूलों के विपरीत थीं। गुरुदेव ने राजाओं की शर्तें न मानी। राजा उदास और कुछ-कुछ दिल से नाराज़ होकर वापिस चले गए।

बजरूड़ के रंघड़ों (राजपूत मुसलमान को सज़ा)

इन्हीं दिनों एक और घटना घटित हो गई। सतलुज से पार बजरूड़ में रंघड़ों और गुज्जरों का बहुत प्रभाव था। गुरु-दर्शन के लिए आ रही संगत को वे लूट लिया करते थे। महाराज के पास उनकी कई बार शिकायत आ चुकी थी। एक दिन गुरुदेव उस तरफ़ शिकार पर गये। रंघड़ और गुज्जर गुरु जी को भी लूटने के लिए आ गए। हज़ूर ने सिंघों को हमला करने का हुक्म दे दिया। नये जोश से भरपूर सिंघों के आगे रंगड़ों और गुज्जरों ने तो क्या ठहरना था! आए दिन संगत को लूटने वालों को सिंघों ने अच्छी तरह धोया और उन्हें ऐसी सज़ा दी जो वे लंबे समय तक याद रखें।

राजाओं की घबराहट

आए दिन गुरु महाराज की बढ़ रही ताकत देख कर पहाड़ी राजा घबरा गए। पहले उन्होंने एक आदमी श्री अनंदपुर साहिब रहने के लिए भेजा, जो उन्हें ख़ुफ़िया रिपोर्ट भेजता रहे। उसने हर बात को बढ़ा-चढ़ा कर बताना शुरू कर दिया। उसकी इस हरकत के कारण राजाओं में भय और भी बढ़ गया।

बलिया चंद तथा आलम चंद की लड़ाई

बलिया चंद तथा आलम चंद दो पहाड़ी राजपूत थे। एक दिन गुरुदेव शिकार खेलते-खेलते उनकी नज़र पड़ गए। गुरुदेव के साथ बड़ी मुश्किल से गिनती के सिंघ थे। बलिया चंद और आलम चंद के साथ सिंघों की अपेक्षा कई गुना ज्यादा आदमी थे। राजपूतों ने सोचा कि अब गुरु जी को पकड़ लेने का बड़ा अच्छा मौका हाथ लगा है। उन्होंने ज्यादा संख्या में आदमी होने के अभिमान में अचानक हमला बोल दिया। युद्ध-नीति को मुख्य रख कर कम संख्या वाली सेना का भाग जाने में ही भला समझा जाता है, परन्तु सिंघों के नये जोश और गुरुदेव की मौजूदगी ने उन्हें मुकाबला करने की प्रेरणा दी। वृक्षों का सहारा लेकर सिंघ डट गए। वे निशाने पर खींच-खींच कर तीर मारते, जिसमें एक भी खाली न जाता। गुरु महाराज की कमान में से चले हुए तीर दुश्मन की छाती में से आर-पार निकल जाते। पहाड़ी राजाओं ने अपने आदमी गिरते देख कर जोरदार हमला बोला। तीर-कमान छोड़ कर योद्धा कृपाण लेकर उतर आए। संख्या में बहुत कम होने के कारण सिंघ लड़ाई जल्दी ख़त्म कर देना चाहते थे। गुरु के योद्धा भाई आलम सिंघ ने आलम चंद पर हमला कर दिया। एक ही नाम के दोनों योद्धा तेग संभाल कर आमने-सामने आ गए। पहला वार आलम चंद ने किया, जो भाई आलम सिंघ ने ढाल पर रोक लिया। बदले में वार भाई आलम सिंघ ने किया, जिससे आलम चंद बच न सका। राजपूत सरदार की दाहिनी बाज़ू कट गई

और वह मैदान छोड़ कर भाग गया। बलिया चंद के साथ भाई उदै सिंघ टकरा गया। भाई उदै सिंघ के हाथों बलियां चंद मारा गया। बाद में बिना नेता के फ़ौज ने मैदान में कहाँ रुकना था! पहाड़ी राजा मैदान छोड़ कर भाग गए। गुरु महाराज फ़तह के जयकारे छोड़ते हुए वापिस श्री अनंदपुर साहिब आ गए। यह घटना १७५७ बिक्रमी की है। इस झपट को आने वाली बड़ी लड़ाइयों का आधार समझना चाहिए।

राजाओं ने दिल्ली से मदद माँगी

इस घटना का बाकी राजाओं के दिल पर गहरा असर हुआ। बहुत प्रभाव पड़ा। उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि वे अकेले कभी भी गुरु जी को जीत नहीं सकेंगे। उन्होंने मुग़ल सरकार से मदद लेने की ठानी। राजाओं ने अपने नुमायंदे दिल्ली भेजे। बादशाह औरंगजेब दक्षिण में उलझा हुआ था। राजाओं की दरखास्त दिल्ली के सूबेदार के सामने पेश हुई। राजाओं ने दो बातों पर ज़ोर दिया था। एक, गुरु जी ने चारों वर्ण मिला कर एक नया पंथ बना लिया है, जो हिंदू-मुसलमान दोनों से न्यारा है और दूसरा, गुरु जी अपने पिता-गुरु की शहादत का बदला लेने के लिए मुग़ल राज्य को तबाह करने की तैयारी कर रहे हैं। दिनो-दिन वे अपनी फ़ौजी ताकत बढ़ा रहे हैं। दिल्ली के सूबेदार ने उस दरखास्त के साथ अपनी रिपोर्ट लगा कर बादशाह की तरफ भेज दी। बादशाह की तरफ से जल्दी ही हुक्म आ गया कि गुरु जी के विरुद्ध पहाड़ी राजाओं की मदद की जाये।

पैंदे खान और दीन बेग की जंग

दिल्ली के गवर्नर ने बादशाह के हुक्म पर अमल करते हुए दो जरनैल— पैंदे खान (वह पैंदे खान दूसरा था, जो छठे गुरु जी के हाथों करतारपुर की लड़ाई में मारा गया था) और दीन बेग के नेतृत्व में दस हज़ार मुग़ल फ़ौज देकर राजाओं की मदद के लिए भेजा। सूबेदार सरहिंद को भी राजाओं की मदद करने का हुक्म हुआ। सरकारी फ़ौज का सारा खर्चा राजाओं ने भरना मान लिया। यह पहली बार था जब हिंदू राजाओं ने उनके विरुद्ध मुस्लिम सरकार से मदद हासिल की, जिन्होंने हिंदू धर्म की रक्षा की पुकार पर अपने पिता-गुरु की शहादत दी थी। बहुत-से पहाड़ी हिंदू राजा अपनी- अपनी फौज लेकर मुस्लिम जरनैलों के साथ रोपड़ के पास आ मिले। दिल्ली, सरहिंद और राजाओं की मिली-जुली फ़ौज की संख्या तीस हज़ार के करीब हो गई। मुकाबले में गुरु जी की फ़ौज बड़ी मुशकल से सात-आठ हज़ार थी। ये सभी गुरु जी के लिए शहीद होने में फख्र महसूस करते थे। श्री अनंदपुर साहिब के बाहर मोर्चे लगा कर सिक्ख दुश्मन का इन्तज़ार करने लगे।

दुश्मन-दल की सामूहिक कमान पैंदे खान के हाथ में थी। गुरु जी ने अपनी फ़ौज को पाँच हिस्सों में बांटा हुआ था। पांचों प्यारे हजूर के बड़े जरनैल थे। उनके मातहत भाई उदै सिंघ, भाई आलम सिंघ, साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी आदि जरनैल अपने-अपने जत्थे के लिए खड़े थे। यह पहली लड़ाई थी, जिसमें साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी अपने जत्थे की कमान करते हुए लड़े। उस समय साहिबज़ादे की उम्र चौदह साल थी।

बहुसंख्या के गर्व पर दुश्मन ने बड़ा भारी धावा बोला। मुग़ल फ़ौज का ख़्याल था कि सिक्खों का

पहाड़ियों पर यूं ही खोखला प्रभाव जमा हुआ है। वे बाकायदा शाही फ़ौज का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। लड़ाई शुरू होते ही शाही जरनैलों का यह भ्रम दूर हो गया। हर मोर्चे पर सिंघों ने बढ़ रही दुश्मन फ़ौज का मुँह मोड़ दिया। मुग़ल फ़ौज का बुरा हाल होता देख कर पहाड़ी पहले ही खिसक लिए। जंग का पासा पलटने के लिए पैंदे खान खुद मैदान में आ गया। उसका रास्ता रोकने के लिए गुरुदेव ने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया। दोनों आमने-सामने आ डटे। पैंदे खान माना हुआ तीरंदाज़ था। पहला वार उसने किया। उसका तीर गुरुदेव के कान के पास से सर्र करता हुआ निकल गया। हजूर ने ललकार कर कहा, ''पैंदे खान! एक वार और कर ले। कोई अरमान बाकी न रह जाए!''

कोध में आकर पैंदे खान ने दूसरा तीर चलाया। गुरुदेव के पवित्र शरीर को वह भी छू न सका। पैंदे खान घबरा गया। तीसरा वार करने की बजाए उसने भागने के लिए अपने घोड़े की लगाम पीछे को मोड़ी। गुरुदेव ने गर्ज कर कहा, ''पैंदे खान! यह योद्धा का काम नहीं। दो वार तूने किये हैं, तो एक वार हमारा भी लेता जा।'' पैंदे खान का सारा शरीर लोहे में जड़ा हुआ था। मुँह और कान नंगे थे। पैंदे खान पलट रहा था, जब काल आ पहुँचा। गुरुदेव का तीरे पैंदे खान के एक कान में लग कर दूसरे कान में से बाहर निकल गया। घोड़े से नीचे गिरता पैंदे खान प्राण त्याग गया। दीन बेग बुरी तरह से ज़ख़्मी हो गया। फिर क्या था? पहाड़ी राजा और उनके योद्धा सिर पर पैर रख कर भाग खड़े हुए। मुग़ल फौज ने भी सरहिंद की तरफ मुँह कर लिया। सिक्खों ने रोपड़ तक दुश्मन का पीछा किया। गुरुदेव ने खालसा फौज को रुक जाने का हुक्म दे दिया। गुरु जी फ़तह के नगाड़े बजाते हुए वापिस श्री अनंदपुर साहिब लौटे। दुश्मन के डेरे में से बहुत सारा सामान सिक्खों के हाथ लगा। यह श्री अनंदपुर साहिब की पहली लड़ाई थी।

राजाओं की फिर से चढ़ाई

राजाओं और उनके समर्थकों की यह बड़ी करारी हार थी। हंडूर का राजा उस समय भूप चंद था। उसके अंदर बदले की आग भड़क रही थी। राजा हरी चंद हंडूरिया भंगाणी के युद्ध में गुरु जी के हाथों मारा गया था। राजा भूप चंद उसका बदला लेना चाहता था। उसने राजा अजमेर चंद से कहा, '' देखो राजा साहब! मैं दोबारा सरकार से मदद मांगने के हक में नहीं। इन हरामखोरों ने हमले कर कुछ हासिल नहीं किया। पहले देख ही लिया था न! लड़ते हैं वे, जिन्हें दुख हो। गुरु का दुख हमें है, जिनकी छाती पर वे फोड़े की तरह बने बैठे हैं। मुग़ल बादशाह को क्या? गुरु हमारा इलाका छीन लेगा, तो बादशाह गुरु के पास से कर के लिए जायेगा? इतनी ताकत का मालिक तो गुरु बन नहीं सकता जिससे बादशाह को ख़तरा पैदा हो जाये। हमें दुख है और हमें ही मुकाबला करना है। हम सभी ताकत लगाएं, तो गुरु को सदा के लिए श्री अनंदपुर साहिब से निकाल सकते हैं।''

सभी राजाओं की एक सभा बुलाई गई, जिसमें राजा भूप चंद की तजवीज़ मंजूर हो गई। बहुत-से पहाड़ी राजा, जिनमें अजमेर चंद कहलूर, भूप चंद हंडूर के अलावा जम्मू, नूरपुर, मंडी, कुल्लू, चम्बा, गुलेर, श्रीनगर, डढवाल आदि के नामवर राजा थे, सभी फौज लेकर श्री अनंदपुर साहिब की तरफ

चल पड़े। नज़दीक पहुँच कर उन्होंने गुरु महाराज को चिट्ठी लिखी, जिसका तात्पर्य था— ''आपको महान गुरु नानक देव जी के गद्दी-नशीन समझ कर आज तक हमने लिहाज़ किया है, मगर अब दोनों में से एक बात पर ही फ़ैसला हो सकता है। आप हमारे इलाके में बसते हो। या तो पिछला अब तक का सारा कर अदा करो और आगे के लिए हर साल सही समय पर कर अदा करना मानो या हमारा इलाका खाली कर चले जाओ। अगर दोनों बातें मंज़ूर नहीं, तो लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ।''

गुरु जी का उत्तर

इस धमकी भरी चिट्ठी के उत्तर में गुरु जी ने लिखा, ''आपको याद रखना चाहिए कि यह सारी धरती हमारे पिता जी ने उस समय के राजा कहलूर से कीमतन ख़रीदी थी। नियत हुई सारी रकम अदा कर दी गई थी। हम अपनी धरती पर बसते हैं, किसी के इलाके में नहीं। न ही हम आपकी प्रजा हैं । न आपको कर मांगने का हक है और न हम देने के लिए तैयार हैं। न ही हमने अपना घर छोड़ कर कहीं जाना है। बाकी रही बात लड़ाई की, उसके लिए हम हर समय पर तैयार हैं। याद रखो! हमारा निशाना शांति के साथ रहने का है। हमने न आज तक किसी पर पहले हमला किया है और न आगे करेंगे, मगर कोई हम पर हमला करे, तो हम आत्म-रक्षा के लिए पूरी शक्ति के साथ मुकाबला करेंगे। राजाओं को चाहिए कि वे बिना कारण इंसानी लहू बहाने का कारण न बनें। वे शांति व अमन के साथ रहें और हमें भी शांति के साथ रहने दें। आशा है कि वे हमारी नेक सलाह मान कर वापिस चले जाएंगे।''

इस सीधे और सही उत्तर को राजाओं ने अपना अपमान समझा। उन्होंने कुछ और मददगार भी बुला लिए। जगतुल्ला की सरदारी में बहुत-से रंघड़ और गुज्जर भी राजाओं के साथ आ मिले। राजाओं को इस मदद से और हिम्मत मिली। उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब को चारों तरफ से घेरा डाल कर हमला करना शुरू कर दिया।

गुरु जी अमन के पक्षधर थे

जीवन का ज्यादातर हिस्सा गुरु महाराज को जंगों-युद्धों में गुज़ारना पड़ा। सही अर्थों में महाराज अमन के पक्षधर थे। उन्होंने कभी भी किसी पर बिना कारण पहले हमला नहीं किया था। हर बार वे अपनी रक्षा लिए हमला करने वाले का मुकाबला करते रहे हैं या कभी ज़रूरत पड़ी तो किसी कमजोर की मदद करने के लिए मैदान में गए हैं। हम गुरुदेव को अमन के इच्छुक ही कहेंगे, लड़ाई के पक्षधर नहीं।

लड़ाई शुरू

राजाओं ने हमला कर दिया। सामने से सिंघ भी मैदान में आ गए। इसी समय माझा क्षेत्र का मसंद भाई दुनी चंद (भाई साल्हो का पोता) पाँच सौ सिंघों का जत्था लेकर आ गया। नयी सहायता आ जाने पर सिंघों के हौसले और बढ़ गए। रक्त-रंजित लड़ाई शुरू हो गई। उस समय सिक्खों के मज़बूत किले फतहिगढ़ और लोहगढ़ थे। लोहगढ़ की सुरक्षा सिक्ख जरनैल भाई शेर सिंघ और भाई नाहर सिंघ कर रहे थे। दोनों के मातहत पाँच-पाँच सौ जवान थे। फतहिगढ़ की सुरक्षा जरनैल भाई उदै सिंघ के हवाले थी। भाई दुनी चंद के पाँच सौ जवान भाई उदै सिंघ की फ़ौज में मिला दिए गए।

साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी की आयु उस समय पंद्रह वर्ष थी। वे कद के लंबे होने के कारण पूरे जवान लगते थे। वे एक सौ जवानों के जत्थेदार थे। उन्होंने गुरुदेव के पास उपस्थित होकर जंग में भाग लेने की आज्ञा माँगी। हज़ूर ने ख़ुशी प्रकट करते हुए हुक्म दिया— ''लाल जी! हर सिक्ख का फ़र्ज़ है कि धर्म-युद्ध में भाग ले। आप भी जाओ और अपनी सिक्खी का सबूत दो!''

साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी को जरनैल भाई उदै सिंघ के मातहत होकर काम करने का हुक्म मिला। सिक्ख जरनैलों ने किले में बैठ कर मुकाबला करने की बजाय मैदान में आकर शत्रु का मुकाबला करने की ठानी। राजा अजमेर चंद, केसरी चंद तथा जगतुल्ला ने भाई उदै सिंघ की टुकड़ी पर हमला किया। सामने से भाई उदै सिंघ, भाई साहिब सिंघ, भाई मान सिंघ और साहिबाज़ादा अजीत सिंघ जी हथियार संभाल कर आ गए। बहुत रक्त-रंजित लड़ाई हुई। छोटी उम्र, परन्तु बड़ी हिम्मत के मालिक साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी बहुत बहादुरी के साथ लड़े। शत्रु भी देख कर दंग रह गए।

साहिबज़ादे की तरफ देख कर जगतुल्ला ने अपने साथी रंघड़ों और गुज्जरों को ललकारा— '' देखो जवानो! गुरु ने हमारे गाँव नूह और बजरूड़ उजाड़े थे। वो सामने गुरु का साहिबज़ादा लड़ रहा है। आज साहिबज़ादे को मार कर गुरु से बदला ले लो।'' रंघड़ और गुज्जर भूखे शेर की तरह साहिबज़ादे के जत्थे पर टूट पड़े।

जगतुल्ला मारा गया

साहिबज़ादे की मदद के लिए जरनैल भाई उदै सिंघ और भाई साहिब सिंघ आ गए। दोनों दल मरने-मारने की ठान कर लाशों के ऊपर से गुजरते हुए आगे बढ़ रहे थे। जगतुल्ला कानों तक कमान खींच-खींच तीर चला रहा था। उस पर भाई साहिब सिंघ की नज़र पड़ी। शत्रु मार में आया देख कर भाई साहिब सिंघ और भी जोश में आ गये। वे ग़ज़ब के निशानची थे। जगतुल्ला की तरफ निशाना लगा कर उन्होंने तीर छोड़ दिया। तीर जगतुल्ला की छाती में लगा और वह धरती पर गिर कर सदा की नींद सो गया। गुरु के योद्धा भाई मान सिंघ ने आगे बढ़ कर जगतुल्ला की लाश पर कब्ज़ा कर लिया। अब जगतुल्ला की लाश लेने के लिए लड़ाई शुरू हो गई। किसी जरनैल की लाश का दूसरे के कब्ज़े में रहना राष्ट्रीय अपमान समझा जाता है। रंघड़ों और गुज्जरों की मदद के लिए कांगड़ा का राजा घमंड चंद आ गया। इस तरफ़ भाई साहिब सिंघ, भाई मान सिंघ, साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी छाती तान कर खड़े थे। रात का अंधेरा होने तक घमासान लड़ाई होती रही, परन्तु सिक्खों ने शत्रु को जगतुल्ला की लाश उठाने न दी। घना अंधेरे होने पर लड़ाई बंद हुई। दोनों दलों के योद्धा अपने-अपने मोर्चों में आराम करने के लिए आ गए। गुरु साहिब ने बहादुरी दिखाने वाले योद्धाओं को इनाम प्रदान किए। भाई साहिब सिंघ और साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी को विशेष रूप से सिरोपाउ प्रदान किए गए।

पहले दिन की लड़ाई में राजाओं का बहुत भारी नुकसान हुआ था। रात को वे विचार-विमर्श करने के लिए एक जगह इकठ्ठा हुए। जगतुल्ला की मौत ने उनके हौसले पस्त कर दिए थे। सबसे घमसान

लड़ाई हुई थी जगतुल्ला की लाश पर। जिस बहादुरी के साथ सिक्खों ने वहां मुकाबला किया था, राजाओं के मन पर उसका बहुत प्रभाव पड़ा था। राजा अजमेर चंद ने कहा, ''देखो भाइओ! आज हमने बहुत नुकसान उठाया है। कल भी यही हाल हुआ, तो हमारे पल्ले कुछ नहीं बचेगा। अच्छा हो, हम किसी बहाने गुरु जी के साथ संधि कर लें।''

कांगड़ा और मंडी के राजा ने भी अजमेर चंद की हां में हां मिलाई। उन्होंने कहा, ''गुरु जी, गुरु नानक साहिब की गद्दी का मालिक हैं। इसलिए गुरु जी के सामने झुक जाने में हमारा कोई अपमान नहीं। हमें संधि कर लेनी चाहिए।'' राजा भूप चंद हंडूरिया और केसरी चंद जस्सवां न माने। वे अगले दिन लड़ाई जारी रखने के हक में थे। वे संधि के लिए न माने। अगले दिन फिर पूरे ज़ोर के साथ लड़ाई हुई। साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी दूसरे दिन भी पूरी बहादुरी से लड़े। यहाँ तक कि दुश्मन के तीरों, गोलियों से उनका घोड़ा मारा गया, परन्तु उन्होंने हिम्मत न हारी। वे मर्दों की भांति अपने मोर्चे पर डटे रहे। उनकी तरफ देख कर सिक्ख दुगुने जोश के साथ लड़े। इस दिन की लड़ाई में भी दुश्मन का ही ज्यादा नुकसान हुआ।

ऋतु बरसात की थी। रुक-रुक कर बारिश हो रही थी। राजा आगे बढ़ कर हमला करने की बजाय चारों तरफ घेरा बांध कर बैठ गए। घेरा लगभग दो महीने रहा। (मैकालिफ, भाग-५, पृष्ठ १३२) सिंघ इस घेरे से तंग आ गए। एक रात उन्होंने दुश्मन वाले मोर्चों पर हमला कर शत्रु का बहुत ज्यादा नुकसान किया। इस अचानक हुए हमले से राजा घबरा गए। अजमेर चंद और मंडी के राजा ने फिर संधि कर लेने की सलाह दी, परन्तु भूप चंद, केसरी चंद नहीं माने। केसरी चंद ने अहंकार में आकर कहा, ''मैं तो चाहता था कि विजय सभी के हिस्से एक समान आए, लेकिन अगर आप हार गए हो, तो मैं कल ही ख़ूनी हाथी किले पर छोड़ कर लड़ाई खत्म कर देता हूं।''

यह ख़बर महाराज के पास भी पहुँच गई। कुछ नरम ख्याली सिक्खों ने चिंता प्रकट करते हुए कहा, ''सच्चे पातशाह! कल राजा केसरी चंद अपना मस्त हाथी किले के दरवाज़े पर हमला करने के लिए भेजेगा।''

गुरु महाराज ने थोड़ा मुस्कराते हुए कहा, ''खालसा जी! घबराने की ज़रूरत नहीं। राजाओं का मस्त हाथी आएगा, तो इस तरफ देखो गुरु का हाथी— भाई दुनी चंद, यह उसका मुकाबला करेगा।''

यह सुन कर बहुत-से श्रद्धालु सिक्ख वाह! वाह!! पुकार उठे। गुरुदेव किसी को विशेष सेवा प्रदान करें, तो सिक्ख उसे गुरु महाराज की अपार कृपा समझते थे। कई सिक्खों ने भाई दुनी चंद को बधाई दी।

दुनी चंद विमुख होकर भाग गया

दुनी चंद यह सुन कर घबरा गया। उसे गुरु महाराज के आशीर्वाद और अपने आप पर भरोसा नहीं था। उसने सोचा, ''भला हाथी और आदमी का क्या मुकाबला! वास्तव में यह हुक्म गुरु जी ने मुझे सज़ा देने के लिए दिया है। पिछले समय हजूर ने कई मसंदों को सज़ा दी थी। मैं तब किस्मत से बच गया था। अब गुरु जी मुझे इस बहाने हाथी के साथ टकरा कर मरवा देना चाहते हैं। किस्मत की

मार ! मैं कहाँ आ फंसा ? खूब आया, मैं गुरु जी की मदद करने और इस सदद का यह फल मिलने वाला है ! मैं पाँच सौ आदमी लेकर न आता, तो अब तक दुश्मन श्री अनंदपुर साहिब की ईंट से ईंट बजा देते। अब भी मैं चाहूँ, तो पासा पलटा सकता हूं। गुरु जी मेरे साथ वैर कमाना चाहते हैं, लेकिन यह चाल गुरु जी को महँगी पड़ेगी। मैं अभी सारे सिक्खों को गुरु जी के विरुद्ध कर देता हूं।'' यह सोच कर दुनी चंद सिक्खों को गुरु जी के विरूद्ध करने का यत्न करने लगा।

रात चार घड़ियाँ बीत गई थी। गुरुदेव आराम करने के लिए चले गए। तत्पश्चात दुनी चंद पाँच प्यारों और अन्य नामवर सिक्खों के पास बारी-बारी से पहुँचा। हर एक के पास जाकर वह एक ही बात पर ज़ोर देता, ''ज़रा सोचो आप ! ऐसे गुरु के साथ हम कब तक निभा सकेंगे ? नौवें गुरु जी ने सिर दे दिया था, परन्तु लड़ाई नहीं लड़ी थी। उनके दिल में संगत का दर्द था। इन्होंने तो गद्दी पर बैठते ही पिछली रीति बदल दी है। रोज़ लड़ाई ! रोज़ लड़ाई ! हज़ारों सिक्ख शहीद हो चुके हैं। संगत की मेहनत की कमाई के लाखों रुपए ख़र्च हो गए हैं। अभी पता नहीं, यह लड़ाई कब ख़त्म होती है ! मुग़ल सरकार और हिंदू राजाओं को गुरु जी ने सिक्खों के शत्रु बना दिया है। हिंदू और मुसलमान दोनों हमारे दुश्मन बन गए हैं। हमने यह रास्ता न बदला तो गुरु नानक साहिब की सिक्खी ख़त्म समझो ! आओ, सिक्खी को बचाने के लिए मेरे पीछे। तीसरे पातशाह के आशीर्वाद के मुताबिक बीबी भानी जी के वंश में से ही किसी ने गुरु बनना है। हम सब मिल कर करतारपुर चलें और धीरमल्ल को अपना गुरु बना लें। धीरमल्ल की अगुआई में सिक्ख ज्यादा सुखी रह सकेंगे। आप न भी मेरा साथ दोगे, तो मैं अपने आदमी लेकर गुरु को छोड़ कर चला जाऊँगा। समझ लो, मेरा आज से गुरु के साथ कोई संबंध नहीं।''

भाई दया सिंघ, भाई उदै सिंघ आदि सभी नामवर सिक्ख दुनी चंद को समझाते रहे, मगर दुनी चंद ने किसी की न मानी। एक बार डगमगा जाए तो आदमी कहां संभलता है ! फिर वह अपने साथ आए आदमियों की तरफ मुड़ा।

दुनी चंद, मजीठा के रहने वाले भाई साल्हो का पोता था। भाई साल्हो बड़ा भक्त और श्रद्धालु सिक्ख था। उसका संगत पर बहुत प्रभाव था। उसके कारण दुनी चंद की भी अपने इलाके में बहुत मान्यता थी। वास्तव में ज्यादातर सिक्ख मसंदों के माध्यम से ही गुरु जी के साथ जुड़े हुए थे। मसंदों को सज़ा मिली। दुनी चंद को तब भी निर्दोष समझ कर कुछ न कहा गया। उसका प्रभाव सिक्खों में पहले से भी ज्यादा हो गया। इसी प्रभाव के कारण कुछ सिक्ख गुरु जी को छोड़ कर दुनी चंद के साथ जाने के लिए तैयार हो गए। मेरे विचार में असली 'बेदावीए' यही हैं, चाहे इनके लिए इतिहास में शब्द 'बेदावा' की जगह 'बेमुख' इस्तेमाल किया गया है।

आधी रात के समय दुनी चंद अपने कुछ साथियों सहित गुरु जी को छोड़ कर चल पड़ा। किले की पिछली दिशा से वह रस्सी के माध्यम से दीवार से नीचे उतरने लगे। कुछ साथी सही सलामत उतर गए। दुनी चंद का शरीर बहुत भारी था। वह उतरने लगा, तो रस्सी टूट गई। दुनी चंद

धरती पर गिर गया। अपने ही वजन से उसकी टांग टूट गई। साथियों ने उसे चारपाई पर डाला और रात के अंधेरे का सहारा लेकर दुश्मन के घेरे में से निकल गए।

दुनी चंद का असली गाँव मजीठा था, परन्तु वह रहता श्री अमृतसर में था। वहाँ उसने अपना मकान बना लिया था। उसके श्री अमृतसर पहुँचने से पहले ही खबर पहुँच गई कि ये लोग गुरु की तरफ से बेमुख होकर भाग आए हैं। लोगों ने उन्हें देख कर मुँह मोड़ लिया। आठों पहर वह पिछले कमरे में छुप कर पड़ा रहता। संगत उसे 'गुरु का बेमुख' और 'बेदाविया' कहती। उसके साथ आने वाले भी लोगों के कटाक्ष सुन कर सोचते कि उन्होंने दुनी चंद के पीछे लग कर गलती की है।

दुनी चंद के भाग जाने की ख़बर सुन कर प्रात: काल गुरुदेव ने फ़रमान किया था :

जो कहूँ काल ते भाज के बचीअत तो इह वुंट भजि जईयै। (बचित्र नाटक)

दुनी चंद की मौत और उसके पोते गुरु की शरण में

दुनी चंद मृत्यु से डरता भाग आया था, परन्तु मृत्यु ने उसका पीछा न छोड़ा। एक रात वह खाट से नीचे उतरने लगा तो पैर पर साँप ने काट लिया और वह मर गया। अगले दिन उसका दाह संस्कार कर दिया गया। किसी की चिता पर जो आम लोगों की तरफ से आलोचना होती है, बहुत हद तक वह सही होती है। दुनी चंद के बारे में सिक्ख जगत की राय सुन कर उसके पोतों को बहुत दुख हुआ। अंत में कुछ समय पाकर दुनी चंद के दोनों पोते— भाई अनूप सिंघ और भाई सरूप सिंघ माझे के नामवर सिक्खों को साथ लेकर गुरु जी के चरणों पर आ गिरे। उन्होंने गले में पल्ला डाल कर विनती की, ''सच्चे पातशाह ! हमारे दादा ने बहुत बड़ा अपराध किया है। उसके किए की सज़ा हम भुगत रहे हैं। बेमुख की औलाद समझ कर संगत ने हमें समाज से निष्कासित कर दिया है। आप क्षमावान हो ! भाई साल्हो के नाम सदका हमारे दादा की भूल को क्षमा कर दो। टूटी गाँठो और भूल क्षमा कर चरणों से लगा लो।''

गुरुदेव एकता के समर्थक थे, अलग करने के नहीं। खुले दिल से हजूर ने सारी भूल क्षमा कर, दुनी चंद के पोतों और उनके साथ आए माझे के सिक्खों को चरणों से लगा लिया।

हाथी के साथ भाई बचित्तर सिंघ की जंग

अगले दिन लोहगढ़ पर हमला करने के लिए केसरी चंद ने अपना हाथी तैयार किया। हाथी बहुत मस्त था। ऊपर से उसको भर पेट शराब पिलाई गई। दुश्मन का वार रोकने के लिए उसके माथे पर लोहे का तवा लगा दिया गया। उसकी सूंढ़ के साथ तलवार बाँध दी गई। महावत को इनाम दिया गया तथा और ज्यादा देने का वादा किया गया। फ़ैसला यह हुआ कि हाथी सीधा दरवाज़े पर टक्कर मार कर दरवाज़ा तोड़ देगा। पीछे आने वाली फौज हाथी के पीछे किले में दाख़िल हो जाएगी। इस तरह रोज़ की लड़ाई एक ही बार में खत्म हो जायेगी। आगे हाथी और पीछे हज़ारों पहाड़िए नगाड़े बजाते हुए किले की तरफ बढ़ चले।

सिक्खों ने विनती की, ''सच्चे पातशाह ! दुनी चंद तो रात को ही भाग गया। अब राजाओं के हाथी का मुकाबला कौन करेगा ?''

कितना भी कठिन समय हो, हजूर के चेहरे पर मंद-मंद मुस्कराहट हमेशा रहा करती थी। गुरुदेव ने मुस्कराते हुए कहा, ''राजाओं का मस्त हाथी आ रहा है। उसका मुकाबला हमारा बब्बर शेर भाई बचित्तर सिंघ करेगा। शेर के सामने हाथी कैसे ठहरेगा ?''

भाई बचित्तर सिंघ उछल लगा कर उठ खड़ा हुआ। उसने हाथ जोड़ कर कहा, ''सच्चे पातशाह ! करन-कारण तो आप हो। यह तो मेरे अच्छे भाग हैं, जो आप मुझे सम्मान प्रदान करना चाहते हो। ख़ालसा तैयार-बर-तैयार है।'' आगे बढ़ कर भाई बचित्तर सिंघ ने गुरुदेव के पवित्र चरण छूए।

गुरुदेव ने भाई बचित्तर सिंघ की पीठ थपथपायी और हाथी का मुकाबला करने के लिए नागनी नामक बरछा दिया। यह रहमत और आशीर्वाद पाकर भाई बचित्तर सिंघ का हौसला दस गुना बढ़ गया। गुरु की कृपा से उसको अपनी जीत पर पूर्ण भरोसा हो गया।

किसी सिक्ख ने फिर विनती की, '' महाराज ! झगड़े की जड़ राजा केसरी चंद भी पीछे आ रहा है। आज उसका हिसाब भी हिसाब हो जाना चाहिए।''

हजूर ने फ़रमाया, ''हां, केसरी चंद को कर्मों का फल देने के लिए हमारा जरनैल भाई उदै सिंघ जायेगा।'' उसे महाराज ने अपने हाथों से कृपाण प्रदान की।

बढ़े आ रहे शत्रु का मुकाबला करने के लिए भाई बचित्तर सिंघ, भाई उदै सिंघ, भाई साहिब सिंघ आदि योद्धा अपने-अपने जत्थे लेकर किले में से बाहर निकले। हाथी के पीछे-पीछे पहाड़िए इस साहस में आ रहे थे कि इस ख़ूनी जानवर का रास्ता रोकने वाला कोई नहीं। मुकाबले में सामने से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का शेर आ रहा था। हाथी के दायें-बायें आ रहे पहाड़ियों का स्वागत सिंघों ने तीरों और गोलियों से किया। कई वहीं ढेर हो गए। इतने में हाथी नज़दीक आ पहुँचा। गुरु के योद्धा भाई बचित्तर सिंघ ने हाथी पर बरछे से वार किया। लोहे का तवा चीरते हुए घुमावदार बरछा (नागनी) हाथी के माथे में धँस गया। वार बहुत जानलेवा था। दर्द से चिंघाड़ता हुआ हाथी पीछे लौट गया। उसके एक दम मुड़ने से महावत नीचे आ गिरा। हाथी बेकाबू हो गया। भाई बचित्तर सिंघ के साथ-साथ भाई मुहकम सिंघ आ रहे थे। मुड़ रहे हाथी की पूँछ उन्होंने कृपाण से काट दी। हाथी शराब पिये हुए था। दोनों तरफ से चोट खाकर वह पागल हो गया। वह पिछे मुड़ा और लगा पहाड़ी सेना को पैरों तले रौंदने। राजाओं की फ़ौज का बहुत नुकसान हुआ। कुछ उसकी सूंड के साथ बंधी हुई तलवार की भेंट चढ़ गए और कुछ पैरों के नीचे दब गए।

केसरी चंद मारा गया

अपनी फ़ौज का बुरा हाल होता देख कर राजा केसरी चंद गुस्से से भरा ललकारता हुआ आगे बढ़ा। भाई उदै सिंघ ने जा केसरी चंद का रास्ता रोका। केसरी चंद ने आक्रोश में आकर भाई उदै सिंघ पर तीरों की झड़ी लगा दी। एक तीर भाई उदै सिंघ के घोड़े की काठी में आ लगा। इतने में दोनों योद्धा एक दूसरे के नज़दीक आ गए। गुरु जी द्वारा प्रदत्त कृपाण निकाल कर भाई उदै सिंघ शेर की

तरह झपट कर दुश्मन पर जा पड़ा। एक भरपूर वार से भाई उदै सिंघ ने केसरी चंद का सिर काट लिया। दस मिनट में उसने नेजे पर टाँगा हुआ केसरी चंद का सिर गुरु महाराज के चरणों में आ रखा। इसी समय हंडूर का राजा भाई साहिब सिंघ के हाथों ज़ख़्मी हो गया। फिर क्या था ? सारे मोर्चों से पहाड़िए पीठ दिखा कर भाग उठे। सिंघों की कृपाण ने भाग रहे दुश्मन दल का बहुत नुकसान किया।

अगले दिन कांगड़ा के राजा घमंड चंद ने हमला किया। बहुत घमासान लड़ाई हुई। अंतत: भाई आलम सिंघ के हाथों राजा घमंड चंद बुरी तरह ज़ख़्मी होकर मैदान छोड़ भाग गया। राजा अजमेर चंद भी अगले मोर्चे खाली कर पीछे हट गया।

मंडी के राजा ने एक बार फिर सलाह दी कि हमें गुरु जी के साथ संधि कर लेनी चाहिए, परन्तु दूसरों ने उसकी सलाह नहीं मानी।

पहाड़ी राजाओं ने एक और छल भरी चाल चली। एक तरफ़ उन्होंने गुरु जी के साथ संधि की बात चलाई और दूसरी तरफ सरहिंद के सूबेदार से मदद की माँग भेजी।

राजाओं की कसमों से भरी चिट्ठी

पंमा पुरोहित राजाओं का दूत बन कर महाराज के समक्ष उपस्थित हुआ। उसने राजा अजमेर चंद की चिट्ठी पेश की। राजाओं की तरफ से यह एक किस्म का प्रार्थना-पत्र था। राजाओं ने गाय और गीता की कसम खाकर लिखा था, ''सच्चे पातशाह ! हम भूलने वाले हैं, भूल कर बैठे हैं। अब हमारी इज्जत आपके हाथ में है। आप बड़े दिल वाले हो। हमारी छोटी-सी विनती मान लो तो हम सदा के लिए आपके हो जायेंगे। आप दो-चार दिन के लिए श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर बाहर चले जाओ। हम लोगों के सामने मुँह दिखाने लायक रह जायेंगे। हम अपने घर लौट जायेंगे, तो आप जी फिर श्री अनंदपुर साहिब आ जाना।''

गुरु महाराज को राजाओं की कसमों पर कोई एतबार नहीं था। सिक्खों ने एक कसम को आज़मा कर देखने पर ज़ोर दिया। गुरुदेव ने कहा, ''खालसा जी ! हम आपकी सलाह मोड़ते नहीं, मगर याद रखना, पहाड़ी राजा इन कसमों पर अडिग नहीं रहेंगे। उनके ख़्याल में इन किलों के सहारे ही हम अजेय हैं। वे खुले मैदान में हमारे साथ दो हाथ करके देखना चाहते हैं। हम दो कारणों से आपका कहा मान लेते हैं। एक तो आप राजाओं की कसमों की वास्तविकता परख लोगे और दूसरा, राजाओं का भ्रम दूर हो जायेगा। वे खुले मैदान में भी सिक्खों के हाथ देख लेंगे।''

फ़ैसला हो गया। गुरु जी ने कुछ फ़ौज श्री अनंदपुर साहिब की सुरक्षा के लिए किलों में रहने दी और कुछ चुनिंदा योद्धा साथ लेकर हजूर गाँव निरमोह (कीरतपुर साहिब के नज़दीक) के बाहर एक ऊँचे टिब्बे पर जा बैठे।

निरमोह की लड़ाई

राजा इसी समय के इन्तज़ार में थे। उधर से उनका बुलाया वजीर खान सूबेदार सरहिंद भी आ पहुँचा। दोनों दलों ने दोनों तरफ से धावा बोल दिया। राजाओं का यह भ्रम जल्दी ही दूर हो गया कि वे खुले मैदान में सिक्खों को जीत लेंगे। सारा दिन बहुत घमासान लड़ाई हुई। सिक्खों ने मार-

मार कर दुश्मन के मुँह मोड़ दिए। वज़ीर खान भी सिक्खों की बहादुरी देख कर हैरान रह गया। पहले दिन की लड़ाई में सिक्ख पूरी तरह से सफल रहे। दुश्मन ने हर मोर्चे पर मार खाई। अगले दिन फिर लड़ाई शुरू हुई। दुश्मन का पहले दिन वाला जोश ठंडा पड़ चुका था।

गुरु जी पर तोप का वार

इस लड़ाई में एक और घटना घटी, जिसका ज़िक्र करना ज़रूरी है। गुरु महाराज एक ऊँची जगह पर बैठे लड़ाई का रंग देख रहे थे। दुश्मन दल में से दो मुसलमान भाई बड़े माने हुए तोपची थे। उन्हें पाँच हज़ार नकद और एक गाँव इनाम देना माना, ताकि वे गुरु जी को तोप के गोले से उड़ा दें। एक मुसलमान तोपची ने निशाना बाँध कर गोला दाग़ दिया। गुरुदेव के निकट खड़ा उनका एक सिक्ख उस गोले से उड़ गया। इससे पहले कि शत्रु दूसरा वार करता, गुरुदेव ने धनुष उठाया और तीर उस मुसलमान तोपची की छाती में से पार कर दिया। उसे मरा देख कर उसका दूसरा भाई तोप की तरफ बढ़ा। दूसरे तीर के साथ गुरु जी ने उसे भी भाई के पास भेज दिया। इस तरह शत्रु की यह घातक चाल सिरे न चढ़ी।

बिसाली का राजा

इसी समय बिसाली का राजा आ पहुँचा। उसने वज़ीर खान से कहा, ''आप लड़ाई बंद कर देने का वायदा करो, तो मैं गुरु महाराज को अपने इलाके में ले जाता हूँ। इस तरह यह अनावश्यक लड़ाई ख़त्म हो जायेगी तथा कई जानें मौत के मुँह में जाने से बच जाएंगी और साथ ही आपकी बात भी रह जायेगी कि आपने श्री अनंदपुर साहिब और निरमोह खाली करा लिया है।''

गुरु जी बिसाली गए

वज़ीर खान और अजमेर चंद ने यह सलाह मान ली। गुरु जी भी बिसाली के राजा की विनती मान कर उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गए। लड़ाई ख़त्म हो गई। गुरु महाराज निरमोह के मोर्चे छोड़ कर बिसाली को चल पड़े। गुरुदेव सतलुज पार कर रहे थे कि शत्रु सभी वायदे भुला कर पीछे से आ धमका। कुछ घड़ियाँ बहुत खूनी लड़ाई हुई। इस घमासान में गुरु जी का महान योद्धा भाई साहिब सिंघ शहीद हो गया। अच्छे शूरवीरों वाले हाथ दिखा कर सिक्ख सतलुज से पार हो गए। गुरु महाराज बिसाली जा पहुँचे। राजाओं ने वज़ीर खान को नज़राना देकर विदा किया और खुद झूठी फ़तह के बाजे बजाते घर जा पहुंचे। ये घटनाएँ १७५७ बिक्रमी में घटित हुईं।

अंम्रित सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥
बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ ॥
वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥
हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥

(पन्ना १३६२)

भावार्थ:— मैंने सभी स्थान देखे हैं, परंतु तेरे जैसा कोई नहीं है। विधाता पुरख अर्थात् श्री गुरु रामदास जी ने तुझे बसाया है, तभी तू इस धरती पर सुशोभित हो रहा है। अनुपम रामदास पुर में सघन आबादी बस रही है। रामदास सरोवर में स्नान करने से सारे पाप और अवगुण नष्ट हो जाते हैं।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के द्वारा उच्चरित इस शबद में उस नगर का महिमा-गान किया गया है जो पहले 'गुरु का चक्क', फिर 'रामदास पुर' और उसके बाद 'अमृतसर' नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करता हुआ सिक्खों के धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक,सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित होता चला गया।

श्री अमृतसर नगर श्री गुरु नानक देव जी से आशीर्वाद प्राप्त, श्री गुरु अमरदास जी की चरण-रज से पवित्र हुई, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी एवं श्री गुरु तेग बहादर साहिब के कर-कमलों से सजाई-संवारी गई कर्म-स्थली, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम प्रकाश का गौरव धारण करने वाली वह धरती है जो सिक्खों के लिए केंद्रीय स्थान का दर्जा रखती है।

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी से वर-प्राप्त भूमि :— गुरमत में गुरु का स्थान सर्वोच्च है। चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी का कथन है कि सतिगुरु जहां आकर विराजमान होता है, वह धरती हरियावली हो जाती है :

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ *(पन्ना ३१०)*

श्री अमृतसर की भूमि श्री गुरु नानक देव जी के चरणों का स्पर्श पाकर सदा-सदा के लिए हरियावली हो गई। 'तवारीख गुरू खालसा' में ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं कि प्रथम पातशाह अपनी पहली उदासी आरंभ कर फतिआबाद से राम तीरथ जाते समय सुलतान पिंड (वर्तमान में सुलतानविंड) की जूह में एक ढाब के किनारे आ विराजे। गांव के एक किसान के घर उत्सव था। वह गुरु जी को महापरुष जानकर खीर, कड़ाह (हलवा), मंडे (रोटी) आदि भोज्य पदार्थ छकाने के लिए आया। भाई मरदाना जी ने बड़े प्रेम से भोजन छका और फिर तन्मय होकर रबाब बजाई। गुरु जी ने सुंदर शबद-गायन किया।

श्री गुरु नानक देव जी ने प्रसन्न होकर फरमान किया कि यहां भोग-मोख (भोग और मोक्ष) का प्रवाह चलेगा।

कालान्तर में यही स्थान श्री हरिमंदर साहिब, अमृत-सरोवर, अमृतसर नगर के रूप में स्थापित होकर विख्यात हुआ।

अमृत सरोवर का निर्माण : तीसरे पातशाह श्री गुरु

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

अमरदास जी की अभिलाषा थी कि प्रथम पातशाह से आशीर्वाद-प्राप्त इस पवित्र भूमि पर एक नगर बसाया जाये। अत: तृतीय पातशाह से आज्ञा प्राप्त कर चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने इस स्थान पर नया नगर बसाने का कार्य आरंभ कर दिया। सबसे पहले तुंग, गुमटाला, गिलवाली, सुलतानविंड आदि गांवों के निकट संवत् १६२७ बि. (सन् १५७० ई.) में एक सरोवर का निर्माण आरंभ किया गया, जिसका नाम 'संतोख सर' रखा गया। श्री दरबार साहिब की रिपोर्ट के अनुसार आस-पास के इन सभी गांव से आवश्यक जमीन खरीद कर संवत् १६३१ (सन् १५७४ ई.) में नये नगर की नींव रखी गई। भाई सालो, भाई रूप राम, भाई गुरीआ, भाई गुरदास आदि अनेक सिक्खों के सेवा रूपी परिश्रम के द्वारा एक नगर बसाया गया और इस नगर का नाम रखा गया—'गुरु का चक्क'।

यहां चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी का निवास-स्थान निर्मित किया गया जो 'गुरु के महल' नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह पावन स्थान बाद में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी एवं छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का भी निवास-स्थान बना। यही नहीं, यह स्थान नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जन्म-स्थान के रूप में भी विख्यात हुआ। इस प्रकार यह स्थान अत्यंत सौभाग्यशाली रहा।

चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने तीसरे पातशाह के हुक्म के अनुसार यहां ढाब पर संवत् १६३४ बिक्रमी (सन् १५७७) में एक और सरोवर खुदवाना आरंभ किया। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इस सरोवर को संवत् १६४३ बि. अनुसार १५८६ ई. में पक्का करवाया और इस नये सरोवर को 'रामदास सर' और बाद में 'अमृत सर' कह कर पुकारा गया। तत्पश्चात् इसी सरोवर के नाम पर नगर का नाम भी 'अमृतसर' प्रसिद्ध हुआ। श्री अमृतसर के निर्माण के विषय में भाई गुरदास जी का कथन है :

बैठा सोढी पातिसाहु रामदासु सतिगुरू कहावै।
पूरनु तालि खटाइआ अंम्रितसर विचि जोति जगावै।
(वार १:४७)

'अमृतसर' का अर्थ है— 'अमृत का सरोवर'। इसकी शोभा का बखान करते हुए पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि इस सुंदर धरती पर अमृत जल से भरा हुआ यह सरोवर सुशोभित है, जो समस्त मनोरथ पूरे करने वाला और चिंताओं को समाप्त कर देने वाला है :

धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम॥
अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे॥
जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे॥
(पन्ना ७८३)

चतुर्थ पातशाह गुरु रामदास जी का फरमान है कि अमृत सरोवर में स्नान करके कौए भी हंस बन जाते हैं :

अंम्रित सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै॥ *(पन्ना ४९३)*

अमृत सरोवर में स्नान करने से जन्म-जन्म की मैल उतर जाती है :

सतिगुरु पुरखु अंम्रित सरु वडभागी नावहि आइ॥
उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु द्रिड़ाइ॥
(पन्ना ४०)

पंचम पातशाह ने श्री अमृतसर की महिमा के विषय में कहा है :

— हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर॥
(पन्ना १३६२)

— रामदास सरोवरि नाते॥
सभि उतरे पाप कमाते॥ *(पन्ना ६२५)*

गुरु साहिबान का फरमान स्पष्ट है कि अन्तर्मन के

अमृत सरोवर में स्नान करो और सभी तरह की बुराइयों से मुक्त हो जाओ। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का कथन है :

अंतरु निरमलु अंम्रित सरि नाए ॥
सदा सूचे साचि समाए ॥ *(पन्ना ३६३)*

भाई गुरदास जी भी कहते है :

गुरसिखी दा नावण गुरमति लै दुरमति मलु धोवै।
(वार २८:९)

श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना : पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने संवत् १६४५ बिक्रमी की माघी अर्थात् मकर संक्रांति वाले दिन अमृत सरोवर के मध्य श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण-कार्य आरंभ कराया। गुरु जी के परम मित्र सूफी संत साँई मियां मीर जी ने श्री हरिमंदर साहिब की नींव रखी।

निरंतर गुरु-कृपा और संगत के परिश्रम से श्री हरिमंदर साहिन का निर्माण-कार्य संवत् १६६१ बिक्रमी अर्थात् १६०४ ई. में सम्पन्न हुआ।

सन् १६०४ ई. में ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना का कार्य भी संपूर्ण हुआ। तत्पश्चात् पंचम पातशाह ने श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश किया। बाबा बुड्ढा जी पहले ग्रंथी नियुक्त किये गये। प्रथम 'वाक' लिया गया, जो इस प्रकार स्वरूपित हुआ :

संता के कारजि आपि खलोइआ
हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥
धरति सुहावी तालु सुहावा
विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥ *(पन्ना ७८३)*

इस प्रकार श्री हरिमंदर साहिब में आठों पहर नाम और गुरबाणी का प्रवाह आरंभ हो गया। पंचम पातशाह ने मानवता को महान् आध्यात्मिक केंद्र प्रदान कर दिया।

श्री हरिमंदर साहिब का महत्व : 'हरिमंदर' का अर्थ है— 'हरि का मदर' अर्थात् 'हरि का घर' यानी 'अकाल-पुरख प्रभु का निवास स्थान'। गुरबाणी में 'हरिमंदर' के आध्यात्मिक प्रभाव से संबंधित स्पष्ट कथन विद्यमान हैं। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है :

हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥
(पन्ना १३४६)

एक अन्य स्थान पर तीसरे पातशाह कथन करते हैं कि 'हरिमंदर' वह स्थान है जहां पहुंच कर 'हरि' का ज्ञान प्राप्त हो जाता है:

हरि मंदरु सोई आखीऐ जिथहु हरि जाता ॥
(पन्ना ९५३)

पंचम पातशाह ने इसी अवधारणा और संकल्प को सम्मुख रख कर श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण कराया। गुरु जी ने श्री हरिमंदर साहिब की चारों दिशाओं में चार प्रवेश द्वार बनवाए ताकि चारों वर्णों और चारों दिशाओं से समस्त प्राणी आ सकें। गुरु जी का उद्देश्य था कि यहां सकल प्राणी अकाल पुरख प्रभु का ज्ञान और प्रकाश प्राप्त कर अपने जीवन को आलोकित करेंगे। गुरु पंचम पातशाह श्री हरिमंदर साहिब को ब्रह्मज्ञान की समझ देने वाला, साधसंगत से सुशोभित स्थान बताते हुए कथन करते हैं :

पोथी परमेसर का थानु ॥
साधसंगि गावहि गुण गोबिंद पूरन ब्रहम गिआनु ॥
(पन्ना १२२६)

इस प्रकार श्री हरिमंदर साहिब आध्यात्मिक उन्नति का ऐसा स्रोत है जो युगों-युगों तक मनुष्यों को हरि-मिलाप की राह दिखाता रहेगा।

अमृत सरोवर एवं श्री हरिमंदर साहिब का महत्व : श्री हरिमंदर साहिब एवं अमृत सरोवर सिक्खों का आध्यात्मिक केंद्र होने के साथ-साथ इनकी जीवन शक्ति का स्रोत भी बना रहा है।

मीरी-पीरी के मालिक छठम पातशाह साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने भी श्री अमृतसर नगर के विकास में विशेष रुचि ली। गुरु जी ने संवत् १६८४-८५ बिक्रमी में यहां 'कौलसर' एवं 'बिबेकसर' दो नए सरोवरों का निर्माण कराया।

छठम पातशाह का सबसे महान कार्य इस नगर को सिक्खों की राजनीतिक चेतना के केंद्र के रूप में स्थापित करना रहा । गुरु जी ने श्री हरिमंदर साहिब के सामने एक ऊँचा राज-सिंघासन स्थापित कराया जो सन् १६०९ ई. में संपूर्ण हुआ। इसका नाम रखा गया— 'अकाल बुंगा' यानी जो दुनिवायी शाही तख्तों के मुकाबले में अकाल पुरख प्रभु का तख्त होने के कारण 'अकाल तख्त' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

छठम पातशाह ने सिक्खों को शस्त्रधारी बनाकर उनमें आध्यात्मिकता के साथ-साथ राजनीतिक समझ-बूझ और शूरवीरता भर दी।

सिक्खों की आन-बान-शान का प्रतीक : मानवता के शत्रुओं का ख़्याल था कि सिक्खों को सारी शक्ति श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन कर और अमृत सरोवर का जल पीकर प्राप्त होती है। सिक्खों को मानसिक रूप से पस्त करने के लिए आक्रमणकारियों ने अक्सर श्री हरिमंदर साहिब और अमृत सरोवर को निशाना बनाया। सिक्खों ने हर आक्रमण के बाद अपनी आन-शान के प्रतीक, अपनी आध्यात्मिकता के इस केंद्र को फिर से निर्मित कर लिया।

संवत् १८०२ बि. (सन् १७४५ ई.) में मस्से रंघड़ ने श्री हरिमंदर साहिब में शराब पीकर, नाच करवा कर इस पवित्र स्थान का घोर अपमान किया। तब भाई महिताब सिंघ और भाई सुक्खा सिंघ ने बीकानेर से आकर मस्से रंघड़ का सिर काट कर उसे उसके द्वारा किए पापों का दंड दिया।

संवत् १८१० बि. (सन् १७५२-५३ ई.) में मीर मन्नू ने अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया, परंतु उसी वर्ष दीवाली के अवसर पर सिक्खों ने सरोवर को फिर स्वच्छ कर लिया।

इससे पहले संवत् १८०८ बि. (सन् १७५१ ई.) में भी लाहौर के दीवान लखपत राय ने अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया था, परंतु दल खालसा ने शीघ्र ही श्री अमृतसर नगर पर अधिकार प्राप्त कर सरोवर की कार-सेवा कर ली थी।

इसी प्रकार संवत् १८१४ बि. (सन् १७५७ ई.) में अहमद शाह अब्दाली ने अमृत सरोवर और श्री हरिमंदर साहिब की बेअदबी की। इस समय बाबा दीप सिंघ जी ने श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया। इसके कुछ समय बाद ही सिक्खों ने श्री अमृतसर शहर को पुन: प्राप्त कर कार-सेवा की और अमृत सरोवर को स्वच्छ जल से परिपूर्ण कर लिया।

सन् १७६२ ई. में अब्दाली ने एक बार फिर श्री हरिमंदर साहिब को बारूद से उड़ा दिया और अमृत सरोवर को मिट्टी से भर दिया। फिर सिक्खों ने पवित्र सरोवर को मुक्त करा कार-सेवा कर ली।

संवत् १८२१ बि. (सन् १७६४ ई.) में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने श्री हरिमंदर साहिब की नई इमारत का निर्माण-कार्य आरंभ कराया, जो शीघ्र ही संपन्न हो गया।

बाद में सिक्ख राज्य स्थापित होने पर महाराजा रणजीत सिंघ ने संवत् १८५९ बि. (सन् १८०२ ई.) में श्री हरिमंदर साहिब को संगमरमर और सोने से सुशोभित कराया। आज श्री हरिमंदर साहिब एवं अमृत सरोवर उसी स्वरूप में शोभायमान हैं।

इस प्रकार श्री हरिमंदर साहिब एवं अमृत सरोवर संपूर्ण मानवता को आध्यात्मिक एवं सांसारिक नेतृत्व प्रदान करता चला आ रहा है।

सिध गोसटि : विचार व्याख्या

-डॉ. मनजीत कौर*

गुरमुखि साचु सबदु बीचारै कोइ ॥
गुरमुखि सचु बाणी परगटु होइ ॥
गुरमुखि मनु भीजै विरला बूझै कोइ ॥
गुरमुखि निज घरि वासा होइ ॥
गुरमुखि जोगी जुगति पछाणै ॥
गुरमुखि नानक एको जाणै ॥ ६९ ॥ (पन्ना ९४६)

६९वीं पउड़ी में भी श्री गुरु नानक पातशाह ने सतिगुरु की महिमा पर प्रकाश डालते हुए समझाया है कि गुरु-दर्शाए मार्ग पर चलना ही जीवन का सदुपयोग है, क्योंकि गुरु के सम्मुख होकर ही मनुष्य निज घर अर्थात् असल स्वरूप में निवास करता है। जो मनुष्य सतिगुरु के हुक्म में चलता है वह परमेश्वर को सर्वव्यापी मानता है।

श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि जो मनुष्य गुरु के आदेशानुसार चलता है वह सत्य स्वरूप शबद को विचारता है और जब वह सच्चे शबद की विचार करता है तो सतिगुरु की बाणी द्वारा सच्चा प्रभु उसके हृदय में प्रकट हो जाता है। गुरमुख अर्थात् गुरु की ओर मुख है जिसका, ऐसा व्यक्ति नाम-रस में भीग जाता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति का मन नाम-रस में लीन रहता है। इस रहस्य (गूढ़ तथ्य) को कोई विरला जन ही (गुरु-कृपा से) समझता है। गुरु के सम्मुख हुए मनुष्य का निवास अपने वास्तविक स्वरूप में रहता है। जो व्यक्ति गुरु के आदेशानुसार चलता है वही असल में योगी है, क्योंकि वह व्यक्ति प्रभु-मिलाप की युक्ति को पहचानता है। श्री गुरु नानक देव जी अन्तिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि गुरु के हुक्म (आदेश) में चलने वाला मनुष्य परमेश्वर को कण-कण में विराजमान जानता है। गुरमुख इस गूढ़ रहस्य को सहजता से जान जाता है कि प्रभु सर्वव्यापी है।

कोई विरला जन गुरमुख बन कर सत्य रूपी शबद का चिंतन करता है। ऐसे गुरमुख-जन के लिए सच्ची बाणी प्रकट होती है। गुरमुख का ही अपने निज स्वरूप में निवास होता है और गुरमुख ही योगी बन कर योग की वास्तविक विधि को जान लेता है तथा सर्वत्र ईश्वर को ही जानता और मानता है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी गुरमुख की उच्चावस्था का वर्णन बहुतायत से किया गया है :

गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ॥
गुरमुखि सदा धिआईऐ एकु नामु करतारु ॥
(पन्ना २९)

अर्थात् गुरमुख व्यक्ति जप-तप और संयम वाले हैं, क्योंकि उनका हरि-नाम से प्रेम है। गुरमुख परमात्मा का सिमरन करते हैं। परमात्मा की सर्वव्यापकता का एहसास और विश्वास गुरु-

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

दर्शाये मार्ग पर चलकर ही मुमकिन है।

बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥
बिनु सतिगुर भेटे नामु पाइआ न जाइ ॥
बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइ ॥
बिनु सतिगुर भेटे महा गरबि गुबारि ॥
नानक बिनु गुर मुआ जनमु हारि ॥ ७० ॥

(पन्ना ९४६)

७०वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक पातशाह गुरु के महत्व को और विस्तारपूर्वक समझाते हुए जीव का मार्गदर्शन कर रहे हैं कि बिना सतिगुरु के जीवन में कष्ट ही कष्ट हैं। गुरु के बिना परमेश्वर के नाम-सिमरन, भक्ति तथा मुक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। यह सब गुरु-सेवा से ही सम्भव है। वास्तव में गुरु के बिना मनुष्य जीवन रूपी बाजी हार जाता है।

गुरु पातशाह इस पउड़ी में पावन फरमान करते हैं कि बिना सतिगुरु की सेवा के प्रभु से मिलाप सम्भव नहीं। सतिगुरु को मिले बिना मुक्ति नहीं हो सकती और सतिगुरु के बिना परमेश्वर-नाम की प्राप्ति भी मुमकिन नहीं। बिना सतिगुरु के इन्सान कष्ट उठाता है अर्थात् अत्यधिक दु:खी होता है। गुरु के मिलाप के बिना मनुष्य (अज्ञानता के) अंधेरे में है। श्री गुरु नानक देव जी इस पउड़ी की अन्तिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि बिना सतिगुरु के मनुष्य जीवन रूपी बाजी हार जाता है।

डॉ. जोध सिंघ ने ७०वीं पउड़ी की पहली पंक्ति का अर्थ इस प्रकार किया है— सच्चे गुरु (प्रभु) के सिमरन के बिना योग नहीं होता और सच्चे गुरु से भेंट किए बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती। उन्होंने 'जोग' शब्द को 'योग' के अर्थ में लिया है।

गुरबाणी में सर्वत्र गुरु की महिमा का बखान किया गया है। सच्चे गुरु के बिना प्रभु का सिमरन व भक्ति सम्भव नहीं और बिना भक्ति के मुक्ति सम्भव नहीं।

कहते हैं कि ईश्वर रूठ जाये तो गुरु ठिकाना है मनुष्य हेतु, लेकिन अगर गुरु ही रूठ जाए तो कोई ठिकाना नहीं। गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि इस संसार में रहता कोई भी व्यक्ति इस भ्रम में न रहे, क्योंकि बिना गुरु के कोई भी पार नहीं उतर सकता। भूले हुए जीव को गुरु ने ही मार्ग दिखाया है और गुरु ने ही उसे समस्त विषय-विकारों से छुड़ा कर भक्ति में लगाया है। जन्म-मृत्यु के भय से मुक्त करने वाला भी गुरु ही है। पूर्ण गुरु की महिमा अनंत है :

मत को भरमि भुलै संसारि ॥
गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
भूले कउ गुरि मारगि पाइआ ॥
अवर तिआगि हरि भगती लाइआ ॥
जनम मरन की त्रास मिटाई ॥
गुर पूरे की बेअंत वडाई ॥ *(पन्ना ८६४)*

गुरु को गुरबाणी में कर्त्ता और सब कुछ करने योग्य बताया है। साथ ही समझाया है कि अपने मन को प्रबोधित और संबोधित करते हुए यही मानना है कि गुरु के बिना अन्य कोई सहारा नहीं। दिन-रात गुरु के ही आसरे रहो, क्योंकि उसके दिये हुए को कोई नष्ट नहीं कर सकता :

— गुरू गुरू गुरु करि मन मोर ॥
गुरू बिना मै नाही होर ॥
गुर की टेक रहहु दिनु राति ॥

जा की कोइ न मेटै दाति ॥ (पन्ना ८६४)
— गुरमुखि मनु जीता हउमै मारि ॥
गुरमुखि साचु रखिआ उर धारि ॥
गुरमुखि जगु जीता जमकालु मारि बिदारि ॥
गुरमुखि दरगह न आवै हारि ॥
गुरमुखि मेलि मिलाए सुो जाणै ॥
नानक गुरमुखि सबदि पछाणै ॥७१ ॥
(पन्ना ९४६)

७१वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक पातशाह ने ''मनि जीतै जगु जीतु'' का सिद्धांत प्रतिपादित किया है। यही भाव जपु जी साहिब बाणी में भी निहित है कि अहंकार को मार कर गुरमुख व्यक्ति मन को जीत लेता है। यही नहीं, गुरमुख-जन मौत के भय को मार कर संसार को भी जीत लेता है। गुरमुख कदाचित जीवन रूपी बाजी हार कर मालिक की दरगाह में नहीं जाता, अपितु जीत कर ही जाता है। गुरमुख शबद के माध्यम से अपने को और प्रभु को पहचानता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो मनुष्य गुरु के हुक्म में चलता है उसने अपने अहंकार को मार कर अपना मन जीत लिया है। गुरमुख ने सदैव सत्य को ही अपने हृदय में धारण किया है। मृत्यु का भय मार कर गुरमुख ने जगत को जीत लिया है। साथ ही गुरमुख-जन कभी जीवन रूपी बाजी हार कर प्रभु के दर पर नहीं जाता। गुरमुख व्यक्ति को प्रभु संयोग बनाकर अपने में लीन कर लेता है। इस रहस्य को गुरमुख ही समझता है। श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि गुरमुख-जन गुरु के शबद के माध्यम से प्रभु से जान-पहचान बना लेता है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि जब तक गुरु-हुक्म की सूझ नहीं तब तक जीव अहंकारी बना रहता है। जब इंसान को प्रभु-हुक्म की समझ पड़ती है अर्थात् जब उसे गुरु-कृपा से यह समझ आती है कि प्रभु के हुक्म के बिना कुछ भी मुमकिन नहीं तब वह अहंकार की बात नहीं करता। जपु जी साहिब बाणी में श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

''मन पर विजय पाना ही संसार पर विजय पाना है'', का पावन सिद्धांत जपु जी साहिब में दिया गया है, जिसमें श्री गुरु नानक देव जी ने जीव को मन पर विजय पाने हेतु प्रेरित किया है :

— आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥
(पन्ना ६)
— सबदै का निबेड़ा सुणि तू अउधू
बिनु नावै जोगु न होई ॥
नामे राते अनदिनु माते नामै ते सुखु होई ॥
नामै ही ते सभु परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥
बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि खुआई ॥
सतिगुर ते नामु पाईऐ अउधू जोग जुगति ता होई ॥
करि बीचारु मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति न होई ॥७२ ॥ (पन्ना ९४६)

७२वीं पउड़ी नें सम्पूर्ण गोष्ठि के उपदेश के सार तत्व को समझाते हुए अवधूत योगी को सम्बोधित करते हुए श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि प्रभु के नाम के बिना प्रभु से मिलाप सम्भव नहीं हो सकता। नाम से ही अहंकार की निवृत्ति हो

सकती है। विशेष तथ्य यह है कि सतिगुरु के नाम के बिना मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे अवधूत योगी! प्रभु-नाम के बिना योग सम्भव नहीं अर्थात् परमेश्वर के नाम के बिना प्रभु से मिलाप नहीं हो सकता। यही सारी गोष्ठि का सार-तत्व है कि प्रभु के नाम के बिना प्रभु-मिलाप सम्भव नहीं। जो प्रभु के नाम में लीन हैं, प्रभु-नाम में रंगे हुए हैं वे सदैव उसी में ही मस्त रहते हैं। नाम से ही सुख की प्राप्ति है। नाम से ही ज्ञान प्राप्त होता है। पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति नाम से ही होती है। (इसके विपरीत) प्रभु-नाम को त्याग कर जो आडम्बरों-पाखण्डों में पड़े हुए हैं, वे कुमार्ग के पथिक हैं।

हे योगी! प्रभु-नाम की प्राप्ति सतिगुरु से ही होती है। पूर्ण गुरु से प्राप्त नाम द्वारा ही योग की युक्ति प्रवान चढ़ती है। इस पउड़ी की अन्तिम पंक्ति में गुरु पातशाह का पावन संदेश समूची मानवता हेतु है कि मन में विचार कर देख लो कि नाम के बिना मुक्ति नहीं मिलती। कहने से तात्पर्य कि आपका अपना निजी अनुभव बता देगा कि नाम-सिमरन के बिना अहंकार से मुक्ति नहीं हो सकती।

दुनिया के समस्त धर्मों में प्रभु-प्राप्ति के अपने-अपने मार्ग बतलाए गए हैं। गुरबाणी में प्रभु-प्राप्ति हेतु प्रभु-सिमरन को सिरमौर अथवा सर्वोत्तम मार्ग माना गया है। सुखमनी साहिब में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा॥
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै॥
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा॥
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ॥
अंम्रित नामु रिद माहि समाइ॥ *(पन्ना २६३)*

अर्थात् प्रभु का नाम-सिमरन सबसे ऊंचा है और नाम-सिमरन से अनेक का उद्धार हुआ है। नाम-सिमरन से तृष्णा मिट जाती है और हर बात की समझ जीव को हो जाती है। प्रभु-सिमरन से मन की मैल कट जाती है और अमृतमयी प्रभु-नाम हृदय में समा जाता है। गुरबाणी में यह भी समझाया है कि नाम की प्राप्ति गुरु से ही मुमकिन है।

तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै॥
तू आपे गुपता आपे परगटु आपे सभि रंग माणै॥
साधिक सिध गुरू बहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणै॥
मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै॥
अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई॥
नानक सभिजुग आपे वरतै दूजा अवरुन कोई॥ ७३॥ *(पन्ना९४६)*

'सिध गोसटि' बाणी की ७३वीं (अन्तिम पउड़ी) में श्री गुरु नानक देव जी ने पारब्रह्म परमेश्वर से अनुनय-विनय करते हुए समूची मानवता को यही संदेश दिया है कि प्रभु अंतर्यामी है। वह प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में विद्यमान है और समस्त रंगों में रंगा हुआ है। समस्त साधक, योगी, गुरु तथा शिष्य प्रभु के हुक्म में ही प्रभु की खोज में लगे हुए नाम की भिक्षा मांगते हैं और प्रभु पर

बलिहार जाते हैं। प्रभु जैसा कोई अन्य नहीं, यह समझ पूर्ण गुरु से प्राप्त होती है।

श्री गुरु नानक पातशाह ने सिधों से विचार-विमर्श करते हुए ७२वीं पउड़ी तक प्रभु-मिलाप के संदर्भ में ज्ञान-चर्चा सम्पूर्ण की। इसके उपरांत ७३वीं पउड़ी में पावन फरमान करते हैं कि हे प्रभु! तेरी अवस्था एवं सीमा को जानने वाला केवल तू ही है। तू कितना बड़ा है, कैसा है, यह केवल तू ही जानता है। यह सब बताने की किसी की क्या ताकत हो सकती है? तू खुद ही प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में विद्यमान है। गुप्त एवं प्रकट रूप में तू ही तू है। तू कभी गुप्त रूप में रहता है तो कभी प्रकाशवान हो जाता है। सूक्ष्म एवं स्थूल रूप में भी तू ही तू है। अनेक साधक, सिध प्रभु के हुक्म में ही तुझे खोजते फिरते हैं। वे तुझसे तेरे नाम की भिक्षा मांगते हैं और तेरे दीदार पर बलिहार (कुर्बान) जाते हैं।

पूर्ण गुरु से ही यह समझ पैदा होती है कि अविनाशी (सदा कायम रहने वाले) परमेश्वर ने यह सारा जगत तमाशा स्वयं ही रचाया है। अन्तिम पंक्ति में श्री गुरु नानक पातशाह पावन फरमान करते हैं कि समस्त युगों में प्रभु स्वयं विद्यमान है। वही सर्वत्र कार्यशील है। उस जैसा अन्य कोई नहीं है अर्थात् ईश्वर जैसा केवल वह आप ही है। उस जैसा और कोई हो ही नहीं सकता।

श्री गुरु नानक देव जी ने सिधों द्वारा पूछे गए गूढ़ प्रश्नों का सहज मार्ग बतलाते हुए प्रभु-मिलाप की युक्ति, गुरु का महत्व, गृहस्थ में रहते हुए प्रभु की प्राप्ति का सहज ढंग विलक्षण शैली में समझाया है। पहली पउड़ी में मंगलाचरण और अन्तिम पउड़ी में प्रार्थना करते हुए, प्रभु का गुणगान करते हुए उसकी अनंतता को उजागर करते हुए समस्त सिधों-साधकों, गुरुओं एवं शिष्यों को परम सत्ता के समक्ष नाम की याचना करते हुए दर्शाया है और उसी पर बलिहार होते हुए दिखा कर प्रभु-चरणों में कृतज्ञता ज्ञापित की है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं :

तू बेअंतु को विरला जाणै॥
गुर प्रसादि को सबदि पछाणै॥१॥
सेवक की अरदासि पिआरे॥
जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे॥ (पन्ना ५६२)

प्रभु जल-थल और अंतरिक्ष में पूर्णतया समाया हुआ है। जिस पर उसकी कृपा-दृष्टि हो जाती है वही परमेश्वर का सिमरन करता है तथा आठों प्रहर उसका गुणगान करता रहता है :

अंतरजामी सो प्रभु पूरा॥
दानु देइ साधू की धूरा॥१॥
करि किरपा प्रभ दीन दइआला॥
तेरी ओट पूरन गोपाला॥१॥रहाउ॥...
जिस नो नदरि करे सो धिआए॥
आठ पहर हरि के गुण गाए॥ (पन्ना ५६३)

अकाल पुरख वाहिगुरु रहमत करें और हमें भी प्रभु-नाम की प्राप्ति हो!

ख़बरनामा

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की दीवारों को नमी से बचाने के लिए सेवा आरंभ

श्री अमृतसर : २ दिसंबर : सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की दीवारों को नमी से बचाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से विशेषज्ञों के परामर्श से रख-रखाव का कार्य किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में गुरु निष्काम सेवक जत्था बरमिंघम के प्रमुख भाई महिंदर सिंघ को सेवा सौंपी गई है। सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ और शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर की उपस्थिति में इस कार्य की अरदास के पश्चात आरंभता की गई। प्रारंभिक स्तर पर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की दीवारों की ३-डी स्कैनिंग के साथ-साथ आई. आर. एस. स्कैनिंग, जी. पी. आर. स्कैनिंग और टोमोग्राफी की जायेगी। इसके माध्यम से नमी के कारणों का पता लगाया जायेगा। गुरु निष्काम सेवक जत्थे के प्रतिनिधि भाई इंदरजीत सिंघ ने बताया कि इस सेवा के लिए आई. आई. टी. रुड़की के प्रोफेसर डॉ. भुपिंदर सिंघ, आई. आई. टी. मद्रास की प्रोफेसर डॉ. स्वाति और बड़ौदा से विशेषज्ञ इंजीनियर कजाद की तकनीकी सेवाएं ली गई हैं। उन्होंने बताया कि स्कैनिंग के बाद नमी के कारणों का पता लगा कर इसका उपयुक्त हल ढूंढा जायेगा। रस्मी तौर पर सेवा आरंभ करते समय वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड, महासचिव एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. गुरबखश सिंघ ख़ालसा, मुख्य सचिव एडवोकेट हरजिंदर सिंघ, यूथ अकाली नेता स. युवराज भुपिंदर सिंघ, बीबी रजनीत कौर, सचिव स. महिंदर सिंघ आहली आदि उपस्थित थे।

पूरा देश खेती कानूनों के विरुद्ध एकजुट
पंजाब के लोगों की भूमिका प्रशंसनीय : बीबी जगीर कौर

श्री अमृतसर : ७ दिसंबर : भारत सरकार द्वारा बनाए गए किसान विरोधी काले कानूनों के ख़िलाफ़ संघर्ष कर रहे किसानों की चढ़दी कला के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से ऐतिहासिक गुरुद्वारों में अरदास समागम आयोजित किये गए। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सीधे प्रबंध वाले गुरुद्वारों के अलावा लोकल कमेटियों से संबंधित गुरु-घरों में भी किसानी संघर्ष की कामयाबी के लिए अरदास हुई। श्री दरबार साहिब परिसर में सुशोभित गुरुद्वारा शहीद बाबा गुरबख़श सिंघ में अरदास समागम हुआ, जिसमें सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ और शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर सहित प्रमुख शख़्सियतों ने शमूलियत की। इस दौरान सिंघ

साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ ने कहा कि केंद्रीय हुकूमत द्वारा बनाए किसानों को दबाने वाले कानून वापिस होने चाहिए। उन्होंने कहा कि गुरु साहिब देश की सरकार को सद्बुद्धि प्रदान करें, ताकि वह मानवता की भावनायों को समझ सके।

इस दौरान बातचीत करते हुए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने कहा कि आज पूरा देश भारत सरकार के अड़ियल रवैये के ख़िलाफ़ खड़ा है, परंतु दुख की बात है कि केंद्र सरकार अपने ही लोगों की आवाज़ नहीं सुन रही, यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र सहित कनाडा और दूसरे देशों के प्रमुख नेताओं द्वारा भी किसानों की हिमायत की गई है। बीबी जगीर कौर ने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की तरफ से किसानी संघर्ष को और भी मज़बूती प्रदान करने के लिए गुरु साहिब के समक्ष आगे अरदास की गई है। उन्होंने किसानों द्वारा हिम्मत के साथ उठाई जा रही हक-सच की आवाज़ को सिक्ख इतिहास से प्रेरित बताया। उन्होंने कहा कि खेती कानूनों के विरुद्ध पूरा देश एकजुट है और इस दौरान पंजाब के लोगों की भूमिका प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि सिक्ख हमेशा ही हक-सच की लड़ाई लड़ते रहे हैं और सिक्ख इतिहास ऐसे संघर्षों के लिए शक्ति का स्रोत है। बीबी जगीर कौर ने केंद्र सरकार से अपील की कि वह किसानों की आवाज़ को सुने और काले कानून रद्द करे।

अरदास समारोह के अवसर पर अपर मुख्य ग्रंथी ज्ञानी जगतार सिंघ लुधियाना, वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड, आनरेरी मुख्य सचिव एडवोकेट हरजिंदर सिंघ, पूर्व जत्थेदार ज्ञानी गुरबचन सिंघ, कार्यकारिणी सदस्य बाबा चरनजीत सिंघ जस्सोवाल सहित शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के कर्मचारियों सहित संगत उपस्थित थी।

संगत तक गुरमत की जानकारी स्पष्ट रूप में पहुंचाना प्रचारक श्रेणी का कर्त्तव्य : बीबी जगीर कौर

श्री अमृतसर : ११ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने प्रचारकों, ढाडियों और कवीशरी जत्थों के साथ एक विशेष सभा कर के प्रचारक श्रेणी को सिक्खी प्रचार के लिए गुरमत समागमों के साथ-साथ संवाद विधि का सहारा लेने की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में सोशल मीडिया की भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, इसलिए प्रचारक श्रेणी इस माध्यम से भी संगत तक पहुँच करे। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के कार्यालय स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल में हुई इस सभा के दौरान धर्म प्रचार कमेटी से सम्बन्धित तीन सौ से अधिक प्रचारक, कवीशर और ढाडी उपस्थित थे। इस अवसर पर संबोधित करते हुए बीबी जगीर कौर ने कहा कि सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रचारक श्रेणी का योगदान अति महत्वपूर्ण है और संगत में गुरमत की विचारधारा का संचार करने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रचारकों की भूमिका प्रशंसनीय रही है। उन्होंने कहा कि आ रही शताब्दियों के अवसर पर धर्म प्रचार लहर को और

भी प्रचंड किया जायेगा, जिसके लिए विभिन्न समागम आयोजित किए जा रहे हैं। बीबी जगीर कौर ने कहा कि प्रचारक जहाँ भी प्रचार करने के लिए जाएं, उसकी वीडियो सोशल मीडिया पर अवश्य डालें। उन्होंने प्रचारकों को हर विषय पर स्पष्ट जानकारी संगत तक पहुँचाने की प्रेरणा की और प्रचार-ढंग संगत की भावनायों के अनुसार सादा और स्पष्ट रखने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मामलों के बारे में भी हर प्रचारक को बाकायदा जानकारी होनी आवश्यक है। इसी के साथ सिक्खी के विरुद्ध टिप्पणियाँ करने वाले लोगों को जवाब देने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

सभा के दौरान शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मुख्य सचिव एडवोकेट हरजिंदर सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भाई अजाइब सिंघ अभ्यासी, हेॅड प्रचारक भाई जगदेव सिंघ और प्रचारक भाई जसविंदर सिंघ शहूर ने भी अपने विचार व सुझाव पेश किये। उपरोक्त के अलावा अतिरिक्त सचिव स. सुखमिंदर सिंघ, उप सचिव स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. सिमरजीत सिंघ, स. तेजिंदर सिंघ पड्डा, ओ. एस. डी. डॉ. अमरीक सिंघ, डॉ. सुखबीर सिंघ, स. सतबीर सिंघ, सुपिंटेंडेंट स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल आदि अपस्थित थे।

बीबी जगीर कौर ने रविशंकर द्वारा सिक्ख भावनायों को ठेस पहुँचाने का लिया सख़्त नोटिस

श्री अमृतसर : १४ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधान बीबी जगीर कौर ने रवि शंकर द्वारा सिक्ख भावनायों के साथ किये खिलवाड़ का सख़्त नोटिस लिया है। वर्णनीय है कि रविशंकर की कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया पर सामने आई हैं, जिनमें उसकी तरफ से पवित्र गुरबाणी और सचखंड श्री हरिमंदर साहिब सहित गुरु साहिबान का अपमान किया गया है। सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की तस्वीर पर पहले पातशाह के साथ अपनी तस्वीर लगा कर रविशंकर ने सिक्ख भावनाओं को चोट पहुंचायी है। इसके अलावा उसके द्वारा पहना ईश्वर लिखा वस्त्र भी एक तस्वीर में उसके पैरों में दिखाई दे रहा है। बीबी जगीर कौर ने इसकी निंदा करते हुए सम्बन्धित को क्षमा मांगने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि सम्बन्धित को पत्र भी लिखा जा रहा है। बीबी जगीर कौर ने कहा कि पवित्र गुरबाणी और मानवता के धार्मिक स्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब का अपमान बरदाश्त नहीं किया जायेगा। रविशंकर को सिक्ख जगत से तुरंत क्षमा मांगनी चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करता तो शिरोमणि गु. प्र. कमेटी कानूनी कार्यवाही की मांग करेगी। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने ऐसा करने वाले लोगों को सख़्त ताड़ना की कि वे अपने दायरे में रहे और ऐसी कोई गलती न करें, जिससे सिक्ख संगत में आक्रोश पैदा हो।

बाबा दीप सिंघ जी शहीद

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN

January 2021

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

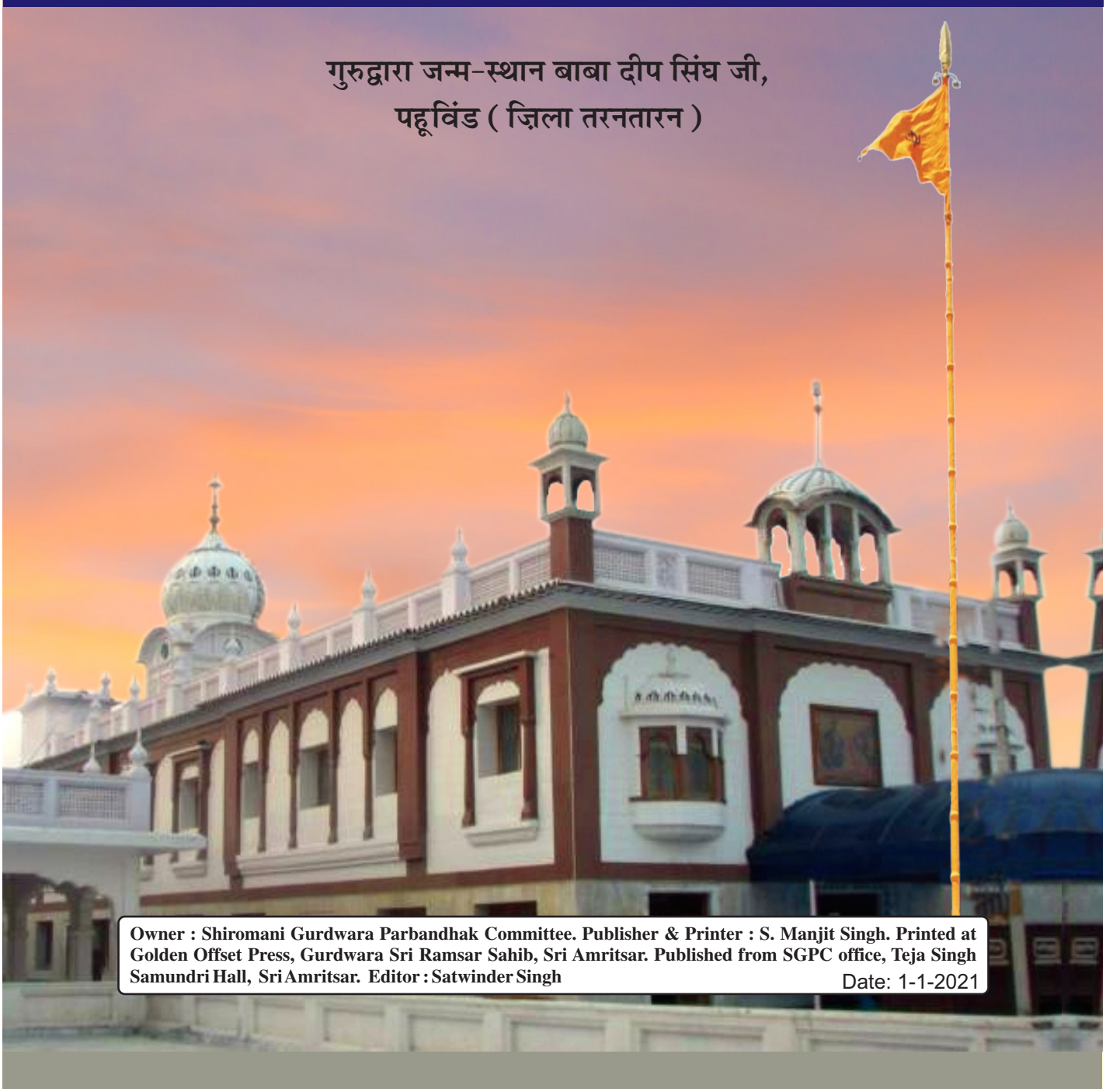

गुरुद्वारा जन्म-स्थान बाबा दीप सिंघ जी,
पहूविंड (ज़िला तरनतारन)

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 1-1-2021